BEHTA PAANI…

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. *आज मेरे होंठ चुप क्यों। 7*

2. अश्रु गिराती क्यों नयनों से। 7

3. *पलकें तेरी यह भीगी क्यों। 8*

4. *किसने मुझको प्यार किया है। 8*

5. *यह गीत मेरे रो रहे। 9*

6. *आँसू की गंगा बहने दो। 10*

7. *पानी से आँसू बहे सदा। 11*

8. *चाहा रोना रो ना पांया। 11*

9. *सूख गये आँसू मेरे सब। 12*

10. *क्यों उदास हो कर मेरे मन। 13*

11. *जीवन में प्यार करें किससे। 13*

12. *क्यों आँखों में आँसू आये। 14*

13. *करूँ प्रीति क्या मैं इस जग में। 14*

14. *ढर ढर अपने नीर बहाये। 15*

15. *पोंछ ले आंसू गीतो को गा। 15*

16. *ढर ढर बहते इन आंसू को। 16*

17. *अंखियां रोती हँसी दिला। 17*

18. *आँसू आ आ कर गिरते हैं। 17*

19. *आँखें यह नीर बहाती है। 18*

20. *आँसू के बहते सागर में। 18*

21. *आशा का दीप जला उर में। 19*

22. *कवियों की महफिल जमा है यहाँ। 19*

23. *बहती अंखियाँ यह कहती है। 19*

24. *तुम सदा रहे रूठे बैठे। 20*

25. *आँखों में आँसू धूसित पग। 20*

26. *आँसू की बरसे है वर्षा। 21*

27. *कुछ दूर चले हम संग तेरे। 21*

28. *आँख से आँसू ढरकते। 22*29. *आँसू झरते ना रोक सकूँ। 22*

30. *जब प्रतिपल हिंसा होती है। 23*

31. *कोई नहीं साथी मिला। 23*

32. *मेरे आंसू तो पानी है। 24*

33. *नयन अश्रु के पोंछ पोंछ कर। 24*

34. *आँसू बहाती है झर झर। 25*

35. *जो रोते नयन हँसी दे दो 25*

36. *आँखो के शबनम से मोती 25*

37. *आँख से आँसू गिराते। 26*

38. *तेरी आँखो में पानी है। 26*

39. *आँसू से भरी हुई आखें। 27*

40. *आंसू को मेरे मत पूंछो। 27*

41. *देख लो आँसू हमारे। 27*

42. *अश्रु से ना, हँस विदा दो। 28*

43. *नीर ना हम पोंछ पाते। 28*

44. *चुप हो चुप हो आँसू पोंछो। 28*

45. *आंखों में आंसू जब ढलके। 29*

46. *आंखों से अश्रु गिरे तेरे। 29*

47. *अश्रु से अंखियाँ भरी हैं। 30*

48. *नीर गिरते हैं धरा पर। 30*

49. *खूब रो रहा भूल स्वयं को । 31*

50. *झर झर अंखियाँ नीर बहाती। 31*

51. *टप टप आंसू गिरते तेरे। 32*

52. *अंखियां रो रो भई बाबरी। 32*

53. *मत आंसू अपने ढलकाओ। 32*

54. *आँसुओं से सिंचित कर माटी। 33*

55. *दुख छिपा यहाँ बस नहीं यहाँ। 33*56. *आंसू के पानी को चख चख। 34*

57. *अश्रु गिरेंगे इन नयनों से। 34*

58. *जिन्दगी रो कर बिताई। 35*

59. *आंखों में आंसू ना लाती। 35*

60. *बहते आँसू मैं किसको दूँ। 35*

61. *बीती क्यों नीर बहाता है। 36*

62. *आंखों के नीर किसे दे दूँ। 37*

63. *आंखो के आंसू देखो मत। 37*

64. *आंचल को मुख में दाव दाव।* 38

65. *किसे सुनायें प्रेम कहानी। 38*

66. *प्यार करें किसको हम जग में। 39*

67. *नहीं बनो निर्मोही छलिया। 39*

68. *ज्ञान नहीं आगे क्या होगा। 40*

69. *ढर ढर आंसू ढलका कर हम। 40*

70. *आँसू ढरका पर गाता जा। 41*

71. *आंसू आयें तो रो लेना। 41*

72. *आंसू की लड़ियों के पीछे। 41*

73. *बैठे यहाँ किनारे पर हैं। 42*

74. *आशा का दामन पकड़े हम। 42*

75. *कौन यहाँ आँसू पोंछेगा। 43*

76. *आँसू को किसने देखा है। 43*

77. *थक गये हम चलते चलते। 43*

78. *नीर ढुलकाना नहीं तुम। 44*

79. *अश्रु की गंगा में बहते। 45*

80. *आँख तुमने मूंद ली है। 45*

81. *पोंछ यहाँ पर आंसू अपने। 45*

82. *अंखियां रोई पर रो न सके। 46*

83. *अच्छा न किया जो छोड़ गये। 46*84. *खेल खिलाये होनी ऐसे। 46*

85. *अश्रु नयन के पीने होंगे। 47*

86. *आँख के तू अश्रु पी ले। 47*

87. *चल निभा दे तू यहाँ पर। 47*

88. *आँखे सूज गई रो रो कर। 48*

89. *देखूँ मैं जहाँ बहे पानी। 48*

90. *आँखों ने आंसू बरसाये। 48*

91. *थक गये हम चलते चलते। 49*

92. चल अकेला इन्तजा क्या। 49

93. *मेरे आँसू को देखा ना। 49*

94. *जग आंसू से सींच रहा है। 50*

95. *अंखियाँ नीर गिरायें झर झर। 50*

96. *क्या कहती आंसू की लड़ियाँ। 50*

97. *पल पल में आंसू आते हैं। 51*

98. *पूछना मत गिरते आंसू। 51*

99. *जिन्दगी में चल रहे हम। 51*

100. *एक गम हो तो कहें हम। 52*

101. *किस जगह जाऊँ बता दो। 52*

102. *पागल मन कैसे समझाऊँ। 53*

103. *जिन्दगी का गीत गा ले। 53*

104. *दर्द तुमने दे दिया है। 54*

105. *बैचेन मन क्या ढूंढता। 54*

106. *झूठी ही तसल्ली मिल जाती। 55*

107. *जो भी पल हैं देख सामने। 55*

108. *कुछ कहो अपनी कहानी।* 56

109. *शिकवा करें किसको यहाँ। 56*

1ण

आज मेरे होंठ चुप क्यों, क्यों उदासी आज छाई? क्यों न हो पाया सुबेरा, दुख भरी यह रात आई। क्यों उठी दिल में तमन्ना, क्यों हुई वह धूर धूसित? क्यों विराने में भटक कर, कोसता हूँ अपनी किस्मत।

जी रहा किस आस को ले, दुख भरी दुनिया के अन्दर। किस बात पर मैं रो रहा, बहके इन कदमों को लेकर। गीत गाता है खुशी के, देखो वह मस्ती में कैसे। ना उठा पाते हम अपना, बोझ गम के आंसुओं से।

आंख अब पथरा गई है, अब नहीं है होश मुझको। तुमसे अब शिकवा नहीं है, छेड़ना न दुनिया मुझको। मिट गये अरमान सब अब, दिल में है शोले भड़कते। क्यों पुरानी याद को ले, अश्रु आंखों से निकलते।

2ण

अश्रु गिराती क्यों नयनों से, प्रिये आज तो दीपावली है। सोच रही खोई खोई क्या, लक्ष्मी का पूजन होना है। अन्धाकार में पड़ी यहाँ क्यों, नभ के तारों को गिनती हो। देख क्षुधाा पीड़ित बच्चों को, अपने सिर को क्यों धाुनती हो।

सन्तप्त तुम्हारा हृदय हुआ क्यों, इस दीपावली के अवसर पर। अनगिनत जल रहे है दीपक, क्यों वहा रही आंसू झर झर। देखो तुम अपने बच्चों को, फटे वस्त्र में झांक रहे हैं। इस दरिद्र जीवन में रहकर, कर्मों को वह कोस रहे हैं।

लक्ष्मीपति जो कहलाते हैं, लक्ष्मी का वह करते पूजन। मन को चिन्तित तुम करके क्यों, अभिशाप समझती यह जीवन। सन्तोष करो अपने मन में, दीपावली हमें नहीं शोभित। जब दुख ही दुख जीवन में है, तब मन को करती क्यों क्रोधित।

3ण

पलकें तेरी यह भीगी क्यों, जब बुझा चुका अपना तू मन।
क्यों सुलग रहा अन्दर अन्दर, सो जा हठ छोड़ तू मेरे
मन। बैचेन हुआ क्यों मेरे मन, ना नींद तुझे आती है मन।
तू भूल गया था जिनको, क्यों याद कर रहा है तू मन?

विगती स्मृतियाँ जागृत हो, क्यों चुभन कर रही मेरे मन।
दूर बहुत जो मुझसे है फिर, चाह रहा तू क्यों उनको मन।
अन्धाकार में इस रात्रि के, आँख खुली क्यों ऐ मेरे मन।
साथी बिन सब सूना लगता, क्यों बतला तू ऐ मेरे मन।

देख रहा है मैं चन्दा नभ पर, हँसता जो उसके वक्षस्थल
पर। याद आ रही हँसी उन्हीं की, विलग हुए यह जीवन
दूभर। पवन चल रही भीनी भीनी, इस अँधियारे में सोते
सब। व्यग्र हो रहा क्यों मेरे मन, मिल पायेंगे ना तुझसे
अब।

नाच रही छवि क्यो उनकी, जब वह निर्मोही मेरे मन।
मिलन विछोह सदा रहते हैं, जीवन के संग ऐ मेरे मन।
बीती रैन बदलते करवट, क्यों उदास होता मेरे मन। चल
काँटों की राहों पर भी, तू मुस्का देना मेरे मन।

4ण

किसने मुझको प्यार किया है, मतलब का व्यवहार किया
है। इस टूटे दिल को जग ने ले, पल पल में खिलवाड़
किया है। जब होती थी रात अंधोरी, पड़ा देखता था मैं
नभ को। नहीं पूछने आया कोई, हृदय तड़फता था जब
उनको।

पुष्पों के ऊपर जब तितली, राग सुनाती थी गुनगुन का।
दिल में एक कसक सी उठकर, शोला बन जाती थी मन
का। जी ने चाहा हम प्यार करें, हँसकर उनके दो बात
करें। पर प्यार निभा ना पाये वह, उस निष्ठुर से क्या बात
करें।

संजो रहा था जब सुपने मैं, चढ़ भावुकता के पंखों पर। गिरा अचानक होश न था तब, हँसता था सारा जग मुझ पर।
बुला रही है मन्जिल मेरी, डगर डगर मैं बढ़ता जाता। उस पर भी बेदर्दी यह जग, पल पल में रोड़ा अटकाता।

व्याकुल मन सोंच रहा मेरा, क्या उनको मैं पा पाऊँगा। जो आज हँस रहा है मुझपर, कल को मेरा हो जायेगा। घूम
रहा दिल अपना ले मैं, प्यार भरे इस जग के अन्दर। उस साथी को खोज रहा मैं, समा चुका जो मेरे अन्दर।

5ण

यह गीत मेरे रो रहे, देखकर दुनिया की हालत। क्या करें हम, ना रास आई, दिल में है मेरे बगाबत। खुद को रिझाने के लिये मैं, बजाता हूँ डुगडुगी को। लगता नहीं है मन मेरा यह, इससे बहलाऊँ स्वयं को।

कुछ खेल ले हँस बोल लें हम, कट सके जीवन रूर यह। कुछ गीत उसके और गा ले, सृष्टि निर्माता छिपा वह। जग का कोना कोना नवता, उस जगताधाार आगे। पागल से देखें हैं हम तो, देख हम कैसे अभागे?

मेरी पीड़ा उबलती है पर, मैं तो बजाता डुगडुगी। देता हूँ तुमको गुदगुदी, तुमको सुनाता हूँ डुगडुगी। यह गा रहा हूँ गीत मेरे, मितवा तुम दिल से सुनना। देख लो मौसम सुहाना, रंग हमको भी जमाना।

धार्म क्या है अधार्म क्या है, पाप क्या है पुण्य क्या है? तू डूब ले तर्कों से हटकर, पूछ ले हम भी तो क्या है? जाये कहाँ हम भी जहाँ में, संग तुम्हारे खेल ले। कुछ कहें अपनी तुम्हारी, मन की घुन्डी खोल ले।

6ण

आँसू की गंगा बहने दो, प्यासा हूँ प्यासा रहने दो। इतना
मुझ पर करो रहम तुम, रोता हूँ मुझको रोने दो। मेरी सुधि
को तुम विसराते, प्रिये प्यार हम तुमको करते। सूखा पत्ता
सूख गया रस, इसीलिये ना गले लगाते।

माना एक याद हूँ भूली, चुभन हाय अब तक न निकली।
मिट पायें ना इस जीवन में, जली हाय आशा की होली।
तुम अपना अधिाकार जताओ, ना कोई अधिाकार हमारा।
सूखे पत्ते से उड़ते हैं, ना कोई है ठौर हमारा।

खुशियों का सागर मैं दे दूँ, गम तेरे सारे पी जाऊँ। खुद
ही भटक रहा मैं पथ में, कैसे तुमको खुश कर पाऊँ। तुम
अच्छे हो जग अच्छा है, अधिाकार नहीं मुझको बोलूँ।
अपनी छोटी सी बुि) से, सारी दुनिया कैसे तोलूँ।

प्यासा जन्मा प्यासा जीया, प्यासा रहा जनम भर ही मैं।
कंठ प्यास से रहा तरसता, प्यास बुझी न इस जीवन में।
बंधान तुझसे बांधा न पाया, खुद रोया चीखा चिल्लाया। इस
विराट जग के आंगन में, खाली हाथ चला मैं आया।

सरगम कैसे करूँ मैं पूरी, मुझे हाय न गाना आये। प्यासे
दिल की प्यास बुझाऊँ, नजर सरोवर हाय न आये। इस
जीवन ने दिया बहुत कुछ, कैसे मैं आभार जताऊँ। सदा
रहा रोता जीवन भर, तुझ तक भी मैं रोता आऊँ।

अविरल आँसू की गंगा में, मुझको हाय डूब जाने दो। कुछ
भी शेष रहे ना बाकी, इसमें ही बस खो जाने दो।

7ण

पानी से आँसू बहे सदा, बस सुख रोने में ही माना। पूछा न किसी ने दर्द है क्या, मैं बना हुआ हूँ दीवाना। जिसको हमने था प्यार किया, उसको तो हम पा पाये ना। इस जग में रहे भटकते हम, टूटा दिल कुछ भी पाया ना।

जनम जनम का प्यासा हूँ मैं, नजरें तेरी तो दुर्लभ है। जल रही शमा ना कहीं पता, मिटने को पतंगा आतुर है। यादों में तेरी खोता हूँ, सपने तेरे नित लेता हूँ। बैचेन मुझे यह कर जाते, दिन रात तड़पता रहता हूँ।

तुम रूठे प्रिय क्यों मुझसे, मैं हूँ जीवित इक लाश बना। कैसे दिल बहलाऊँ अपना, तुमसे मिलने का था सपना। आना चाहूँ मैं डगर तेरी, पर उलझ उलझ क्यों जाता हूँ। घायल दिल कैसे समझाऊँ, जी पाता ना मर पाता हूँ।

8ण

चाहा रोना रो ना पाया, निष्ठुर हाय विधाता क्यों है? जीवन का संगीत न पाया, कैसी हाय विवशता यह है। एक कहानी लिखने जैसे, प्रतिपल मैं बढ़ता जाता हूँ। चाह नहीं कोई जीवन में, किस आशा को ले जीता हूँ।

अथक कहानी जीवन की यह, कहें समझ कुछ भी ना आता। व्याकुल मन पर उठा लेखनी, फिर भी यह लिखता ही जाता। अन्धाकार से ढकी चदरिया, इस सारे जग के प्रांगण में। कौन दीप से ले प्रकाश यह, कौन खेलता इस प्रांगण में।

जख्म दिखायें किसे यहाँ हम, सब जख्म ही लेकर फिरते है। सम्बन्धा बनाते है प्रतिपल, टूटे फिर भी वह जाते हैं। किसको अपनी व्यथा कहे हम, दर्द छिपाये सब बैठे हैं। देखें जग खामोश हुए हम, इन्तजार किसकी करते हैं?
सुपनों का मैने जाल बुना, चढ़ भावुकता के पंखो पर।
जब गिरा मुझे तो होश न था, चढ़ सका न मैं उस सीढ़ी
पर। मुस्कान खिली न होठों पर, देखा मैने तुमको उदास।
कर सका अर्चना न पूरी, प्यासा था प्यासी रही प्यास।

जब जब है सुख देना चाहा, दुर्भाग्य किया पीछा मेरा। ना
समझ सके मेरी पीड़ा, तुमने भी मुख मुझसे फेरा। स्वार्थ यहाँ
टकराते है जब, आँख बदल जाती है तब ही। तुम न बनो
प्रिय मुझसे ऐसे, घुटता हूँ हरपल ऐसे ही।

मदहोशी छाई रहती है, सब टूट गये सुपने प्रियतम। यह
कदम बहकते जाते है, पाता मैं ठहर नहीं प्रियतम।

9ण

सूख गये आँसू मेरे सब, देख रहा खोया सा नभ को।
अपने दिल की व्यथा छिपाये, कहें किसे देखें इस जग
को। कौन सुनेगा किसे सुनाऊँ, मेरी दुख की भरी कहानी।
लिखी गई जो हृदय पटल पर, बहुत हुई जानी पहचानी।

यादें वह मीठी बचपन की, दिन रात सताती है मुझको।
सुपनों की लड़ियाँ बिखर गई, यह बात अखरती है मुझको।
क्यों आज चाहता दिल रोना, दुख मान चुका अपना
गहना। जिससे हमने थी करी, क़ा, उसने भी साथ निभाया
ना।

पी जाते गरल अमी सम हम, ले स्वाभिमान को जीते हम।
चलते रहते मंजिल पर हम, रो हँस कर कदम बढ़ाते हम।

ना दया मांगते तुमसे हम, मांगे तो दया न करना तुम।
आंसू जब जायें छलक कभी, मेरा उपहास न करना तुम।

डगमग मेरी जीवन नौका, अन्धाकार में बढ़ी जा रही। किसे
खबर है कहाँ लगेगी, सागर में है बही जा रही।

क्यों उदास हो कर मेरे मन, अश्रु गिराते हो नयनों से। नहीं सान्त्वना देगा कोई, किसकी तुम आशा करते हो। जीवन के संघर्षों से तुम, मत उदास होना मेरे मन। कठिन क्षणों में जीवन के तुम, मुस्का देना ओ मेरे मन।

घिर रही घटायें काली हों, तू रुक रुक कर मत रोना। साहस से कदम बढ़ाता जा, निज साहस को तू मत खोना।
सुख दुख की इस धूप छांव में, किस दुनियां में हम चलते हैं। होठों पर हँसी मचलती है, कभी छलकते आँसू है।

ज्योति जगा कर आशाओं की, निज मंजिल पर बढ़ते जाना। जूझा है जो संग्रामों से, वह विजयी हुआ हमनें जाना।
खुल जायेगे मार्ग रूके जो, देख तेरे साहस को ओ मन। जीवन की टेढ़ी राहो पर, मत उदास होना मेरे मन।

जीवन में प्यार करें किससे, गीतें को किसे सुनायें हम? मजबूरी को सब रोते है, अपनी मजबूरी रोते हम। कौन सुनेगा किसे सुनाऊँ, बुझा हुआ दिल ले मैं हारा। सुपने रहे अधूरे मेरे, रिता हूँ किस्मत का मारा।

सोंचा हमने दो चार घड़ी, प्यार की मीठी बात करेंगे। टूटे दिल में खुशी जगाकर, दिल अपना आबाद करेंगे। पर समझ नहीं पाया कोई, सब समझ हुई धोखा ही बस। अपनी अपनी सी कहते सब, सुनकर पीड़ा देता जग हँस।

बस वही शमा में खोज रहा, जो आलिंगन मेरा कर ले। मिट जाऊँ शलभ सा जीवन में, बस प्यार भरी गोदी में ले।

12ण

क्यों आँखों में आँसू आये, क्यों मौन हुई कविता रोये। क्यो आज जला मेरा यह दिल, जब सावन में कोयल गाये। तू राही है उस पथ का मन, जिसका न किनारा कोई मन। वह नहीं मिलेंगे जीवन में, यह समझ धीर धार मेरे मन।

दुनियां में दुख को देख देख, जीवन बोझा सा लगता है। मन खोया खोया रहता है, दिल गम में डूबा रहता है। दिल के सब तूां मचल मचल, घुट घुट करके रह जाते है। कुछ मुँह से ना कह जाते हैं, आंसू आकर रह जाते है।

यह प्यार का पंथी भटक रहा, इस प्यार भरे दिल को लेकर। पर प्यार करेगा कौन मुझे, इस स्वार्थ प्रिय जग के अन्दर। आशा के और निराशा के, बादल मुझ पर छा जाते हैं। प्यार किया किसने है मुझको, पूछ यही बस जाते हैं।

मुस्काहट थी जो होठों पर, वह छोड़ चुकी पीछा मेरा। सब साथी मुझको छोड़ गये, दुख ने ना छोड़ा साथ मेरा।

13ण

करूँ प्रीति क्या मैं इस जग में, प्रीति हुई जब एक कहानी। गीत इस समय गाऊँ क्या मैं, बहता आंखो से है पानी। सब सुपना सा बन समय सुहाना, बीत गया वह पल के अन्दर। कांटो से प्यार हुआ अब तो, इस विशाल जग के अन्दर।

जग के दुस्तर मारग पर मैं, चल रोता हूँ हँस लेता हूँ। पी कर समस्त पीड़ा को मैं, मस्ती में गाता जाता हूँ। मेरी मंजिल कहाँ है जग में, जान नहीं मैं यह पाया हूँ। इस जग में भावुक बन कर मैं, ठोकर प्रतिक्षण ही खाता हूँ।

अपने सन्तप्त हृदय को ले, जग में निराशा हो घूम रहा। शीतल यह भी ना कर पाती, सागर की लहरें देख रहा। 14ण

ढर ढर अपने नीर बहाये, चलता तू पर संभल न पाये। क्रन्दन करते इस जीवन में, नहीं कोई धौर्य बंधाये। मर्म ना जाने तू जीवन का, विलख रहा रोता तू क्या है? इस जीवन का मतलब समझो, प्यार बांट जिय हर्षाता है।

देख जगत की लीलाओं को, अपना गीत बनाए हरपल। अंधियारे में सब खो जाये, मनुआ फिर क्यों गाये पागल। लेकर चाहत की झोली को, सब ही घूम रहे जग अन्दर। दुख की चोटे खाते खाते, जख्मी होते मारग दुस्तर।

नाचूँ गाऊँ जी बहलाऊँ, जग से हँस हँस प्रेम बढ़ाऊँ। जाने क्या फिर भी हो जाये, जग पीड़ा से उबर न पाऊँ। कुछ भी चाह रहे ना बाकी, नहीं किनारा कोई पाऊँ। दुखियों को मैं गले लगाऊँ, प्यार की गंगा में बह जाऊँ।

15ण

पोंछ ले आंसू गीतो को गा, नहीं सुने तो फिर भी मन गा। प्यार हुआ क्यों इतना बोझिल, बीती बातों में क्यों रोया? जीवन का संग्राम अनूठा, यादों में तू किसकी रोया?

उलझी डोर कठिन रस्ता है, मिले चुनौती कदम कदम पर। मिलन विछोह का खेल यहाँ पर, अपनी अपनी चाह यहाँ पर। बीच चुनौती फिर भी तू गा, चोटें खाकर फिर भी मन गा।

प्यार करे जिससे मन प्यारे, जीवन का हर सांस पुकारे। पल पल उसकी करे प्रतीक्षा, चाहे हरपल नयन निहारें। उनकी यादों में खो मन गा, अपनी सुधि विसरा कर मन गा।

आँसू की अविरल गंगा में, सदा डूबता रहा जनम भर। कसम तुझे गाता जा तू अब, ?ेंके चाहे कंकर पत्थर। झूमें सुन गीतों को तू गा, गाता जा मस्ती में मन गा। किसको आज दिखाये आंसू, कौन इन्हें देखेगा जग में। पग पग पर जो दन्श लग रहे, कौन इन्हें समझेगा जग में। नष्ट हो गया अपनों से गा, छोड़ दिलासा को मन तू गा।

उठती गिरती इन लहरों को, कोई रोक न पाया जग में। बहते जीवन में बह जा तू, सब आशाओं को तज मग में। धूप छांव का खेल समझ, निज को समझा कर तू मन गा।

बाड़ खा गई अपने खेत को, ना कोई रखबाली करता। नागों की ?ुंकारों में मन, विचलित हो क्यों धौर्य न रखता। टूटे सभी सहारे पर गा, शिकवा किससे मन तू ऐ गा।

16ण

ढर ढर बहते इन आंसू को, कोई भी रोक नहीं पाता। विवश हुआ कैसा यह जग, गिरते तरू को थाम न पाता। बही जा रही गंगा देखो, कितने यह अरमान समेटे। लेकर सुपनों की दुनिया को, चले मिटें पर दर्द लपेटे।

सुपने विसर विसर जाते है, टीस पिरोते सुख दुख की हैं। बहते इस जग की धाारा में, विवश हुए बहते जाते है। साथ जियेंगे साथ मरेगे, देते थे भरपूर भरोसा। लुप्त हो गये किन्ही क्षणों में, संभल सके ना टूटी आसा।

इन्तजार मैने की तेरी, गया समय तेरी यादों में। निमिष न देखे मुझसे रूठा, घुटता रहा सदा जीवन में। बचपन बीता गई जबानी, सुपनों की दुनिया में खोया। खा ठोकर देखूँ मैं नभ को, नहीं पास में कोई आया।

कैसे समझायें इस मन को, पल पल से परिवर्तित जग में। पागल मनुआ पकड़े सबको, आये हाथ न कोई जग में। कहाँ भाग कर जायें भागे, आग यहाँ सब ओर लगी है। मेघों से बूँदें पाने को, यहाँ सभी की होड़ लगी है। 17ण

आंखियां रोती हँसी दिला, जीवन को रूल बना प्यारे। गीतों में तेरे तड़प छिपी, उस तड़न में भी सुख प्यारे। तू दीप दीप से दीप जला, खुशियों का तू उजियारा कर। गम में जो खोई आंखें है, उनकी आंखों को रोशन कर।

धाीरे धाीरे संभल संभल कर, प्रतिपल कदम कदम बढ़ाना है। कठिन यहां का सारा जीवन, तूानों से ना डरना है। छिन गई यहाँ जो मुस्काहट, उनको अपनी मुस्काहट दे। जो प्यार चाह में तड़ रहे, उनको तू गले लगा सुख दे।

पीड़ा का सागर उबल रहा, अपना तू प्यार लुटाता जा। गीतों को अपने गाता जा, जीवन में खुशियां भरता जा। छोटा सा जीवन देख यहाँ, सांसे अपनी अर्पण कर दे। चल साथ यहाँ सबके गा ले, इस जीवन को उत्सव दे दे।

18ण

आँसू आ आ कर गिरते हैं, इस धारती में मिल जाते है। पूछ रहा धारती से यह मन, दिल में क्यों सुमन ना खिलते हैं। सब ओर देख कर मन झूमा, आँखें खोली हमने जग में। क्यों भंग पड़ गया इस रंग में, मजबूरी जब अपनी बोली।

छूना चाहें गगन सितारे, पर पग पग में कांटे गढ़ते। कौन विवशता में पड़कर हम, पंछी पिजड़े के बन रोते। जीवन थोड़ा आस अधूरी, मिटते चैन न आये हमको। मृगमरीचिका में पड़कर हम, तड़े शान्ति मिली न हमको।

ले ले हाथ तराजू घूमें, पर सिसकी को सुने नहीं जग। किसको किससे कितना मतलब, तड़प न देखे मतलब का जग। प्यासी नजरें देख न पायें, कौन यहाँ पर प्यास बुझाये? सारा जग यह भया बाबरा, नये नये नित स्वांग रचाये।

इस जग की है रीति निराली, कैसे अपनी प्यास बुझायें। ले ले सिसकी रोते जायें, गीत वही बस बनते जायें। दर्द लिये जो यहाँ घूमते, उनको गले लगा ले मन तू। बना बाबरा घूम रहा है, इस दिल को समझा ले मन तू। अपनी प्यास बुझा ले मन तू, गा ले मन तू गा ले मन तू। दर्द बाट ले प्यास बुझेगी, खिलो सुमन बन दे सुगन्धा तू।

19ण

आँखें यह नीर बहाती है, जब याद तुम्हारी आती है। दिल को यह खूब रूलाती है, मीठी बातें जब छाती है। तुम भूल गये अच्छा न किया, तुम नाता मुझसे तोड़ गये। आनन्द मिटा सब जीवन का, पीड़ाओं को तुम पिरो गये।

करते हम याद तुझे हरदम, पल भर भी तुझे न विसराते। मेरी बेबस मजबूरी लख, क्यों नहीं हाय तुम सुकचाते। सर्जन के साथ विसर्जन है, यह प्रकृति नियम है सदा सत्य। तुम आओ चाहे ना आओ, जायेंगे हम सब यहाँ लुप्त।

यादों में तेरी रो लेंगे, अपने होठों को सी लेगे। शिकवे सारे विसरा कर हम, इस दिल पर पत्थर रख लेगे। मुस्काहट की खातिर तेरी, मैं लड़ता रहा सदा से हूँ। लड़ रहा स्वयं से अब मैं हूँ, तुझको मैं भूल न पाता हूँ।

बुझ जायेंगे बस सुलग सुलग, जीवन की यही कहानी है। आंसू के झरनों के भीतर, यादों की छिपी कहानी है।

20ण

आँसू के बहते सागर में, ना राज हँसी का जान सके। जग में आये हम भटक रहे, क्या खोज रहे ना सोंच सके। मन डोल रहा भंवरा सा यह, जग में वैभव को खोज रहा। ना जान स्वयं को यह पाया, बस भूल भुलैया भटक रहा।

कितने ही आये इस जग में, सब लुप्त हो गये नहीं पता। व्याकुल मन मेरा पूछ रहा, जीवन की क्या है हुई खता?
सब आते यहाँ मिलें हमसे, फिर छोड़ हमें सब जाते है। बहती धारा आँसू की है, वह टीस हमें दे जाते हैं। 21ण

आशा का दीप जला उर में, धीरे धीरे वह रखती पग। अपने प्रियतम से मिलने को, वह रखती सकुचाती सी पग। उसका हर कदम लड़खड़ाता, अपने को रोक नहीं पाती। लज्जा से सिकुड़ी जाती वह, फिर भी हर क्षण बढ़ती जाती।

प्रियतम की प्यारी बाते जब, उसके मस्तिक में छाती है। धीरे धीरे मुस्काती है, फिर गुनगुन गाने लगती है। आँसू हर्षित हो छलक पड़े, सब चुभन मिटी देखा उसने। वह लिपट गई अपने प्रिय से, तब किया समर्पण हँस उसने।

22ण

कवियों की महफिल जमा है यहाँ, सुनायेंगे नगमें सुनेंगे यहाँ। सुनाना हमें भी है नगमा यहाँ, डूबो जिसे सुन के न हम हो यहाँ।

आंसू मुझे दो न गम लो यहाँ, चलो अब चले हम न गम हो जहाँ। तुम्हारी निगाहों में झाकूँ यहाँ, तुम्हारी चुभन को भी जानूँ यहाँ।

नगमों की मदिरा में डूबो यहाँ, मिलेगा ना कोई किनारा यहाँ। छलके है मदिरा लो झूमों यहाँ, मुझे प्यार दो प्यार ले लो यहाँ।

महफिल को प्यारे तुम जैसे मितवा, मैने कहा गीत सुना तुमने मितवा। झर झर झरे जब गीतों की गंगा, तन का मिटे ताप मन होवे चंगा।

बहती रहे यह गीतों की नदिया, अनेंको रगों में रंगी गीत मदिरा। झूमे यहाँ पी गीतों की मदिरा, महफिल में बटती रहे गीत मदिरा।

23ण

बहती अँखियाँ यह कहती है, तेरे हरपल गुण गाती हैं। इस जीवन में ना विछुड़े हम, सांसे यादों में बहती है। तुमको अपना सब कुछ माना, सारा जीवन तुझ में ढाला। तुम रूठ गये क्यो हुए खा, ऐसा मैंने क्या कर डाला।

तुम रूठ गये हम तड़ रहे, बहते आँसू को ना देखा। बहती जाती जीवन नदिया, कैसे दूँ मैं अपना लेखा। दुख अपने छिपा छिपा हँसते, तुम हमको तो प्यारे लगते। कहीं नीर एक न गिर जाये, चाहें सारी खुशियां देते। 24ण

तुम सदा रहे रूठे बैठे, इन आंसू को ना देखा। मांगती रही भीख प्यार की, मेरा ना अन्तस देखा। बता अभागिन हुई हाय क्यों, दरश तेरा न पायेंगे। मन्दिर तेरा युही खुलेगा, और पुजारी आयेंगे।

यादों को तेरी ले हरदम, जी भर कर हम रोयेंगे। आंसू का नजराना ले लो, फिर वापिस ना आयेंगे। इस प्रकृति के आंगन में, खिलना हँसना ओ हमदम। यदि मुझसे हो रूसवाई जो, विस्मृत कर देना हमदम।

मैने गाये गीत मिलन के , तूने आंख उठाई ना। जलती मैं विरह अग्नि में, तेरे आंसू आये ना। जग की पगडण्डी पर भटकी, साथ तेरा न ले पाई। मुझको दूर किया क्यों तुमने, लुटा चुकी सब हरजाई।

25ण

आँखों में आँसू धूसित पग, तूने सुन ली तुझसे बोलूँ। किसको मैं और यहाँ बोलूँ, सुन ली तूने मुखड़ा खोलूँ। गीत प्यार के तुम गाते हो, अँखियाँ यह झर झर झरती है। तरस रहा मैं जनम जनम से, दिल ने प्यार सदा चाहा है।

आशा के अब दीप जलाना, जीवन यह रोते बीत गया। नेह लगा कर भूल न जाना, यह डर क्यों मुझमें बैठ गया। खुश मैं हूँ तुम जो मुझे मिले, अब विलग न तुम मुझसे होना। जग के सागर में साथ साथ, संग में नैया को तुम खेना।

अब गीत मिलन के गाये हम, सब भूल यहाँ जीवन के गम। धारती पर ूल खिलाये हम, प्रेम सुवास ैलाये हम। 26ण

आँसू की बरसे है वर्षा, जीवन चाहत ले ले तरसा। पागल मन कैसे समझाऊँ, ना रहना दीखे सब सुरसा। यहाषविछुड़ सब ही जाते हैं, जीवन की इस पगडण्डी पर। जी भर कर हम रो लेते है, नहीं कहानी कोई भी थिर।

पीड़ा का अम्बार यहाँ है, मिटा नहीं हम गम को पाते। किसको बोले गम ना समझे, नीर नयन के दो गिर जाते। ज्ञान की गंगा को पी पी कर, मैने इस मन को समझाया। जग की लीला देख देख कर, पागल मन यह तो भरमाया।

झूठ कपट है कदम कदम पर, जीवन है अनबूझ पहेली। सुख दुख का यह खेल खेलकर, जली यहाँ पर सबकी होली। कोई यहाँ ठिकाना ना है, सब विलीन होना सागर में। चिन्तित मन तू क्यों होता है, मन विलीन हो हँस सागर में।

27ण

कुछ दूर चले हम संग तेरे, फिर साथ तुम्हारा छूट गया। सतरंगी सुपने बिखरे गये, आ कोई लुटेरा लूट गया। तेरे संग मैं यह भूल गया, ना विलग कभी होंगे जग में। यादों को ले तेरी मीठी, आंसू आते है इस मग में।

मीठी मीठी बातों में मैं, तुमसे ही जीवन पाता था। मेरा तुम से जो नाता था, शाश्वत मुझे वह लगता था। मैने सोंचा हमदर्द तुही, नैया का खेवनहार तुही। पल दो पल की यह प्रीति दिखा, क्यों छोड़ गये बता तुही।

सच है जीवन की कठिन डगर, पर साथ चले थे इस पथ पर। तूफान उड़ा ले जायेगा, था पता नहीं हम गये बिखर। जीवन का सब रस सूख गया, सूखा पत्ता सा लगता हूँ। गिर पडू. डाल से किसी समय, बस उस क्षण को ही तकता हूँ।

28ण

आँख से आँसू ढरकते, जख्म ले सब ही सिसकते। इन कंटीली राह में तुम, क्यो सुमन को ना खिलाते। व्यर्थ यह भी व्यर्थ वह भी, कौन सा संकल्प लोगे। कर सको सबके मुदित मन, क्या खुशी की तान दोगे?

व्यर्थ यह भी व्यर्थ वह भी, व्यर्थ में हम जी रहे हैं। किन उमीदों को जगाकर, व्यर्थ पोषित कर रहे हैं। खेलते हम खेल जग में, मन सभी बहला रहे हैं। टूट जाये दिल न कोई, टूटते ही जा रहे हैं।

व्यर्थ पीछा कर रहा है, भूख से बेहाल सब है। पर पकड़ ले डाल कोई, गुनगुना, सब जा रहा है। व्यर्थ में तुम हो समर्पित, व्यर्थ की सौगात ले लो। मिट रही सारी लकीरें, जान इसका जाम पी लो।

29ण

आँसू झरते ना रोक सकूँ, इतना यह दर्द छिपा है क्यों? बह नहीं सका इस नदिया में, बैचेन हुआ फिरता हूँ क्यों? कितनी ही कथा लिये यह नभ, चुपचाप देखता रहता है। झड़ते पत्ते इस दुनिया में, मिटने को इंगित करते हैं।

जी सके नहीं मिट सके नहीं, पीड़ा का सागर लहराया। अंसुओं से नयन भरे मेरे, इस दुनिया में मैं भरमाया। अमृत पाने को भटक रहे, विष को निशदिन पीते रहते। आंखों में सुपने तैर रहे, चाहत से हम निज को भरते।

धीरे धीरे सारे बन्धान, टूट रहे हैं इसी जगत में। दुख लेने को क्या आते है, इस विशाल सुन्दर से जग में। मन गीत यहाँ गा कटे फर, नयनों में सबके झांक यहाँ। पीड़ा की चादर बिछी हुई, कुछ तो कर दे बरसात यहाँ।

30ण

जब प्रतिपल हिंसा होती है, जीवन निर्माण हुआ ही क्यों? खोज नहीं पाया अदृश्य को, मैं खोज रहा हूँ उसको क्यों? डगमग चलती इस नौका में, हम पहुँच कहीं ना पाते है। पल दो पल की खुशियों को ही, क्यो पकड़ नही हम पाते है।

इस विराट मेले में तू क्यों, ठगा ठगा सा देख रहा है। अपनी धुन तू बजा यहाँ पर, भाग्य यहाँ चाहे रूठा है। खोना है हम खो जायेंगे, इस विशाल जग के आंगन में। चलते रहना चलते जाना, प्यार बांटना इस जग में।

टेढ़ी मेढ़ी अनजान डगर, ठोकर खा मैं गिर पड़ता हूँ। तेरे दामन को खोज रहा, नित प्रीति बढ़ाना चाहूँ हूँ। किस किससे करें शिकायत हम, सबके अपने अपने शिकवे। हे ईश मुझे तू पथ देना, मैं मिटा सकूँ कुछ तो शिकवे।

31ण

कोई नहीं साथी मिला, जो रोती आंखे पोंछता। कैसी हमारी नियति है, जो ठोकरों को चूमता। तुम बता दो मार्ग कोई, मेरा साहस खो रहा। लगती घुटन कैसी यहाँ, ना पार इसके जा रहा।

चाहता स्वर को मिलाऊँ, मिलन के मैं गीत गाऊँ। पर विवशता हाय कैसी, स्वर न तुमसे साधा पाऊँ। देख नयनों को हमारे, सूख कर पत्थर हुये हैं। समय की इस धूलि में ही, सभी अरमा मिट गये है।

बन न सके हम किसी के, जिन्दगी ढोते रहे बस। तुम न आये जिन्दगी में, पर प्रतिक्षा कर रहे बस। 32ण

मेरे आंसू तो पानी है, इस जग की यही कहानी है। अपने अपने दुखड़े रो कर, जायेगे गुजर कहानी है। टूटा दिल आंखों में पानी, ना प्यार मिला जग जान लिया। मन कितना तब बैचेन हुआ, जब तुमने भी उपहास किया।

मितवा तुम कभी नहीं रोना, शिकवा भी अब है क्या करना। सबकी अपनी है डगर अलग, बस रहो सुखी अपना कहना। सबके सतरंगी सुपने हैं, कैसे उनमें वह रंग भरे। पागल बन कर हम दौड़ रहे, ना मर्जी उसकी प्यार करे।

इस जग की पगडण्डी पर है, सोंचे सुपने न जाये बिखर। बोझिल बिन प्यार डगर होती, आंसू गिरते है बस झरझर।

33ण

नयन अश्रु के पोंछ पोछ कर, कभी हार तूने मानी ना। बेबस चलता रहा दिशा ना, प्रीति का तू संगीत सुना ना। प्यास भूख में जीवन काटा, मिली न मंजिल चल चल हारा। सुनता रहा सदा तू सबकी, नहीं किसी ने तुझे दुलारा।

फटे वस्त्र पर दीन हुआ ना, मजबूरी ने सदा सताया। श्रम को तूने गले लगाया, ना ही तूने शीश झुकाया। चलता रहा निरन्तर धुन में, जीवन का बसन्त शर्माया। श्रम बूदों से कर पल्लवित, इस जग को तू हरा बनाया।

देखो वह कौन बुलाता है, लतपथ हुए अश्रु से नयना। चल उड़चल उस पार गगन के, अब तो बस चैना ही चैना। मेहनत का तू पाठ सिखाकर, इस जग से तू विदा ले रहा। अपनी तपस मिटा अब तो तू, तेरा है जग यह ;णी रहा।

34ण

आँसू बहाती है झर झर, इस दिल को चीरती है। आती कहाँ से पीड़ा, घट घट में बस रही है। घट में ऊनता जो भी है, छन्द रूप उसे दे दे। गा ले तू भी बैचेन मन, तू भुला पीड़ा को दे।

सब मौन बन कर बैठे हैं, सहम कर शीश झुकाये। ढूंढे किसे इस रस्ते में, धौर्य कोई बंधाये। इस नियति के मतलब क्या है, आ कर चले जाते हैं। आँख सूनी हुई हमारी, पार क्षितिज के क्या है?

चाहत प्यार की दिल चाहे, पर प्यार नहीं पा पाते। चलते हैं संभल संभल कर, पर रस्ते भूल जाते। अँधियारी गलियों में हम, सिसकते दर्द लिये है। मतलब यहाँ नहीं किसी से, आंसू झड़ी कहे है।

35ण

जो रोते नयन हँसी दे दो, अनमोल खजाना पाओगे। तुम जितनी चुभन मिटाओगे, उतनी सुवास को पाओगे। जीवन कैसे जीना चाहो, संगीत सुनो इस जीवन का। सुख देने से सुख मिलता है, सुख दो फिर खिले कमल मन का।

दुख को अपना कर दुनिया को, बदरंग बना क्यों रोते हो। सुख दुख का खेल जगत सारा, सुख दो तुम भी सुख पाते हो। थिर नहीं यहाँ है यह जीवन, तू बाट सके मुस्काहट दे। बहता जा जग के सागर में, अपना जीवन अर्पण कर दे।

36ण

आँखो के शबनम से मोती, किसको आज दिखाये तू। कौन सहारा देगा तुझको, आस करे पल पल में तू। चीख चीख चिल्लाता प्रतिपल, थाम हाथ लो तुम मेरा। स्वार्थ पूर्ण जग कौतुक को, ना जाना मुँह को तेरा। वह तेरी ओर निहारें ना, जिनके पीछे तू भागे। जग रीति निराली जाने ना, भटक रहा पर ना जागे। बहती नदिया बहता जा तू, नहीं रूकेगी यह धारा। सुख दुख का सब ज्वार समेटे, गुजरेगा जीवन सारा।

37ण

आँख से आँसू गिराते, देखते अरमान जलते। विवश कितने हो रहे हम, स्वार्थ चक्की में पिसते। दर्द सीने में छिपाये, चल रहा सब बह रहा है। सब समय की मार है यह, खेल कैसा चल रहा है?

कौन किसको याद करता, जी रहे निज वासना में। जल पतंगा राख होता, दौड़ता निज की चुभन में। क्या चुभन है यहाँ घुटन है, जाल में उलझे हुए हैं। चाहते इससे निकलना, जा रहे फंसते यहाँ हैं।

नियति के हम स्वा थपेड़े, पता ना हम किधार जायें। ढूंढती आँखे तुझी को, हंस भवरं में यह न जाये। याद कर रोया तुझी को, इंतजा की पर न आये। क्या करें शिकवा किसी से, डूबता सूरज यह जाये।

नियति के इस चक्र में हंस, मैं लड़ा था पर न हारा। मेरी आशा तुम्ही थे, तोड़ो न यह दिल हमारा। कर रहे मुझसे किनारा, गीत मैं ना गा सकूँगा। तुम चलोगे साथ मेरे, मैं तभी बस चल सकूँगा।

38ण

तेरी आँखो में पानी है, विस्मृत हम ना कर पायेंगे। मिटने की जगत कहानी है, मिट रहे यहाँ मिट जायेंगे। जूझो जूझो इस दुनिया से, संघर्ष नाम है जीवन का। आनी जानी इस दुनिया में, कुछ भी न बचा इस सपने का।

जो घुमड़ रहे बादल सिर पर, उनको भी गले लगाता हूँ। पग मेरे कम्पन करते हैं, फिर भी चलता जाता हूँ। पर तेरी आँखों में आँसू, मैं पोंछ नहीं क्यो पाता हूँ। बेबस हाथों को देख देख, चुपचाप खड़ा रह जाता हूँ। 39ण

आँसू से भरी हुई आखें, तरस गई पर मीत मिला ना। कैसे समझायें इस दिल को, जला बसेरा जोर चला ना। थक थक बैठा मैं इसी राह, पर कोई सहारा न पाया। दिल के जख्मों की पीड़ा को, मैं नहीं यहाँ सहला पाया।

तू गले लगा या ठुकरा दे, मधु विष चाहें कुछ भी दे दे। पथ तेरा सदा निहारेंगे, दे टीस हमें या सहला दे। नयनों में झांक जरा मेरे, सुपने आंखों में तैरे हैं। कांटो से सब तन जख्मी है, यादें ले सांसे चलती है।

40ण

आंसू को मेरे मत पूछो, इनको गिरने दो बहने दो। पीड़ा की अपनी लिये कथा, इस शून्य जगत में खोने दो। ताने बाने बुनते बुनते, यह बीत गया सारा जीवन। सोंचा था वह सब नहीं हुआ, प्रतिल परिवर्तित यह जीवन।

चाहत कितने नाच नचाये, दिन रात लड़े इसकी खातिर। इस रंग बदलती दुनिया में, थे चले कहाँ से गये बिखर। नीर करें यह अंखियाँ सिचिंत, मन होता है प्रतिपल चिंतित। गा मन फिर भी प्यार गीत को, करना प्यार वृक्ष को सिंचित।

41ण

देख लो आँसू हमारे, कौन मन्जिल ढूंढते है? हंस भंवर में वासना के, जिन्दगी को कोसते हैं। सब नशे टूटें यहाँ पर, मेरा नशा टूटा तो क्या? बहते से चल रहे है, न तुम चले शिकवा है क्या?

क्या गलत है क्या सही है, धारणा सबकी बनी है। जिन्दगी यह जा रही है, तुमसे कुछ शिकवा नही है। पोंछ लो आंसू नयन के, कुछ नहीं है यहाँ पर थिर। दे सको मुस्कान दे दो, ना मिलेगा यह फिर। 42ण

अश्रु से ना, हँस विदा दो, प्यार की सौगात यह दो। पुष्प सौरभ को लुटाता, तुम स्वयं को खिल लुटा दो। देख तू उस पार नभ के, कौन इंगित कर रहा है। साधाना तेरी अधूरी, कौन पूरी कर रहा है?

कौन से कोने में बैठ, अश्रु को ढलका रहा है। छोड़ बीती बात को अब, कारवां यह जा रहा है। कौन सा अमृत्व लेकर, हम यहाँ पैदा हुए है। गम अनेकों है यहाँ पर, धान्य हँस जो पी गये है।

43ण

नीर ना हम पोंछ पाते, चाह थी तुमको सजाते। इस समय के चक्र में हंस, क्या नियति ना समझ पाते। संग तेरे जीना मरना, पुष्प आशा के संजोते। देखते ही देखते सब, सूख सारे पुष्प जाते।

जलता पीड़ा से यह दिल, किस किरण को खोजती है। शून्य में अटकी नजर है, उस पार क्या देखती है। छूट जाये सांस तन की, तन को कुछ श्रृंगार दे दो। बिछुड़ कर फिर ना मिलेंगे, जग को कुछ उपहार दे दो।

44ण

चुप हो चुप हो आँसू पोंछो, चलते रहे फर पर तुम। खो जाओ तुम इसी धारा पर, मधुर तराने देकर तुम। यहाँ शिकायत किससे है, सबके अपने मन चंचल हैं। सुख दुख का यह खेल चल रहा, नाचे यह भूमण्डल है।

अपने अपने सत्य यहाँ पर, अपने अनुभव से कसते। उनमें भी होता परिवर्तन, जब हम आगे को बढ़ते। कैसा वीयावान यहाँ है, ढूंढ रहे निज की मंजिल। खेल खिलाती यहाँ नियति है, पल में खो जाती हलचल।

लहरें यह संदेश सुनाती, उठना गिरना जीवन है। अपनी गति को कभी न खोना, चलना ही बस जीवन है। 45ण

आंखों में आंसू जब ढलके, ना डूब उसी में मत जाना। चलना जीवन की नियति यहाँ, चलते चलते बस खो जाना। चलो यहाँ जितना चल पाओ, ख्वाबों में मत तुम भरमाओ। समय चक्र की धार अनूठी, बनो मुसाफिर फिर खो जाओ।

इस भूल भुलैया पथ पर मन, चलना काहे को भूल गया। न रूकना है चलते जाना, दर्शन यह काहे छूट गया। चल मन चल मन हर पल तू चल मन, ना हार मान जीवन से मन। बढ़ने को आतुर बीज हुआ, पथ में अनेक बाधाा है मन।

चल चल कर अथक परिश्रम कर, जड़ ने अपना जाल बिछाया। नन्हा बीज बना वृक्ष तब, देखा जिसने वह हर्षाया।

46प

आंखों से अश्रु गिरे तेरे, बीन उन्हें हम नही पाये। तुम बिछुड़ गये क्यों भूल हमें, विश्वास न तेरा ले पाये। नहीं काट सका चक्रव्यूह, ;ंसता ही गया ;ंसता ही गया। ले मृगमरीचिका सी आंखे, घुटता ही गया घुटता ही गया।

चहुँ ओर घिरा रोता ही रहा, विश्वास के बन्धान टूट गये। अपनों से तुझे बिलग करके, गद्दार तुझे मिटा ही गये। जो संभल नहीं सकता जग में, धारती संभाले है उसको। कितना ही रोयें हाय तुझे, अब भूल गये हो तुम हमको।

अच्छा न किया जो छोड़ गये, इस दुनिया से तुम हार गये। मिल दिल राहत को लेता था, तुम भरी माँग को मिटा गये। गीत सुनायें आज किसे हम, सुनने को ना कोई आतुर। यादों को तेरी लेकर बस, नीर निकलते है यह झर झर।

न समझ सके समझा न सका, क्या विधिा ने खेल किया हमसे। क्यों मित्र हमारा शत्रु बना, दिल से वह दूर हुआ हमसे। सब डूब रहा अब क्या पकड़े, क्यों छोड़ सके न तुझ बन्धान। तेरे आँसू की कीमत पर, लुट जाता सब खोता क्रन्दन। केवल इतना है। कुछ चल लेते बस संग तेरे, जीवन की बस यह पीड़ा है।

47प

अश्रु से आंखियाँ भरी हैं, ूल अब मुरझा गया है। संग संजोये साथ सुपने, टूटते सब जा रहे हैं। तन थके यह जा रहा है, अब नहीं काबिल तुम्हारे। निज दिशा में बहे जाओ, कर हमें तुम अब किनारे।

न गिला तुमसे कोई है, भूख मेरी मैं चलूंगा। साथ दो चाहें न तुम दो, मरते दम तक मैं चलूँगा। चाह में जी रहे अपनी, सब यहाँ संसार में हैं। अश्रु से ले लेा विदाई, छोड़ दो मझधाार में है।

देखता उस पार नभ के, कोई है मुझे बुलाता। डूबता ही जा रहा हूँ, ना मुझे कुछ रास आता। तुम हो अच्छे मैं बुरा हूँ, वासना ले तड़ता हूँ। साथ मेरा अब नहीं हैं, डगर अपनी जा रहा हूँ।

48प

नीर गिरते हैं धारा पर, खोल पांखे तू यहाँ पर। मिल यहाँ विछुड़े सभी हैं, प्यार की गंगा बहा पर। प्यार के दो गीत गा ले, दिल से दिल को तू मिला लें। छूट जायेगा यहाँ सब, कुछ समय तो मुस्करा ले।

जिन्दगी पल पल में देखो, यह बदलती जा रही है। अनगिनत अरमान थे जो, राख उन पर चढ़ रही है। जा रहा सब भागता है, कुछ नहीं रूकता यहाँ है। पकड़ कर क्यों बैठते हो, तोड़ बन्धान तू कहाँ है?

जी रहे शिकवे लिये हम, अन्त ना आता कभी है। किससे शिकायत हम करें, पूछता कोई नहीं है। चलता ही जा चलता ही जा, चल सके जब तक धारा पर। दे सके दे दे खुशी तू, ;ण चुकाना है यहाँ पर।

49प

खूब रो रहा भूल स्वयं को, सुख दुख का यह खेल चल रहा। मिटने का तू राज जान ले, देख सभी कुछ स्वयं हो रहा। खोज रहे हम खोई मन्जिल, खोते हम ना मिलती मंजिल। बहला कर इस मन को हारे, तृप्ति हुई ना रूठी मंजिल।

कुछ कर लें सब खो जाता है, सारा जीवन ढल जाता है। घूम रहे सुख की खातिर हम, जीवन में सुख कब आता है। क्यों लगती है भूख यहाँ पर, तृप्ति यहाँ पर फिर होती है। पागल मनुआ सोंच रहा है, चुभन कलेजे क्यों उठती है?

खेल चल रहा इसी शून्य में, इसमें ही सब खो जायेगा। प्रीति बढ़ ले इसी शून्य से, इसी शून्य से सब पायेगा।

50ण

झर झर अंखियाँ नीर बहाती, सुधि मेरी तुमने बिसरा दी। छोड़ अकेला मुझको जग में, चले गये क्यों हाय सजा दी। तुझे मनाऊँ मैं कैसे अब, जीवन नदिया डूबी जाये। आँसू ढरकाये मैं रोई, तुम भूले पास नहीं आये।

खोई मिठास इस जीवन की, तू बता कैसे विष को पीवे? छोड़ मुझे तू चला गया है, मनुआ रोवे कैसे जीवे? उठती हूँ मैं गिर पड़ती हूँ, पर नहीं सहारा पाती हूँ। तुम छोड़ गये प्रियतम मुझको, निशदिन रोती मैं रहती हूँ।

मझधाार बीच तुम छोड़ गये, नैया मैं रोकर खेती हूँ। किसको पीड़ा यह दिखलाऊँ, जग के ताने मैं सहती हूँ। सहमी आंखें देख रही हैं, पेट मांगता है रोटी को। इस मन को कैसे समझाऊँ, प्यार भूख तिरस्कृत जीवन को।

जनम जनम की दासी तेरी, करे जिन्दगी मेरी क्रन्दन। कर न सकी मैं सेवा तेरी, बनी हाय मैं ऐसी पापिन। पथराई यह मेरी आँखें, दूर क्षितिज में यह अब झांके। मिलने को यह आतुर नयना, कौन बन्धा है मुझको रोके? 51ण

टप टप आंसू गिरते तेरे, तुझको देख देख मैं रोया। खोई खोई सी यादें ले, टूटा दिल ले जी भर रोया। अलग अलग है डगर यहाँ पर, आँसू ढरते हो जाते विलग। दर्द तेरा मैं कैसे पीऊँ, इस दुनिया की रीति है अलग।

चलता जा कंटक पथ पर तू, निज साहस को खोना मत तू। स्वयं पोंछ ले अपने आंसू, नियति खिलाये खेल खेल तू। आये यहाँ अजनबी सब थे, साथ हुआ किस किसका जग में। किसे खोजती रोती आंखें, छोड़ गये इस नश्वर जग में।

माना अब वह ना आयेंगे, यादे ले कर मिट जायेंगे। निष्ठुर ने जो खेल किया है, तिल तिल कर मिटते जायेगे।

52ण

आंखियां रो रो भई बाबरी, विवश हुआ मैं तुझे पुकारूँ। सोना चाहा सो ना पाया, जागूँ किसकी राह निहारूँ। पल पल चाहूँ तेरा सम्बल, छिपे हुए तुम मुझे रिझाते। मौन उपासक हमे बनाते, फिर तुम क्यों यह सृष्टि चलाते।

बीज गिरा यदि मरूस्थल में, उठना वही से संभव है। करो शिकायत नहीं किसी से, जीवन यह क्षण भंगुर है। जो भी है जैसा इस जग में, स्वीकार करो स्वीकारे हम। निज नियति समझ कर स्वीकारें, यह सोंच मिटाती है सब गम।

गाता जा मन तू चलता जा, कटुताओं को भुला भुलाकर। खूब देख ले जग की लीला, फिर न मिलेगा ऐसा अवसर।

53ण

मत आंसू अपने ढलकाओ, सुख दुख के तुम पार उठो मन। आदि मधय और अन्त यही है, शून्य में खेले समझ तू मन। इसी शून्य में बहती सरिता, जीवन के सुख दुख को लेकर। करो अर्चना इसी शून्य की, नहीं बिना इसके कोई

घर। सुपने उठते गिरते प्रतिपल, अन्धो बनकर भटक रहे हैं। नहीं किनारा कोई पाते, बेबस हो कर रह जावे हैं। कितना चीखो चिल्लाओ तुम, गूंज शून्य में खो जायेगी। पियो शून्य जियो शून्य को, दृश्य भूल मन हरि पायेगी।

शुरू शून्य से अन्त शून्य से, लिपटा है सभी शून्य से। कैसे विसराओगे इसको, बने मिटे सब खेल इसी से। बना वृक्ष वह छिपा बीज में, खूब रचाये खेल जगत में। फिर भी भूल विचरते इसको, यह आश्चर्य हुआ इस जग में।

54ण

आँसुओं से सिंचित कर माटी, मन फूल खिला दे हँस कर। ले यहाँ सहारा तू भी दे, मिलजुल कर यह कट जाये सफर। सुपनों के बना बना कर घर, जीवन को क्या पहचान सके। क्या प्यास लिये हम घूम रहे, क्या छिपा प्रयोजन जान सके।

बस नहीं यहाँ दुख छिपा यहाँ, आंसू अनन्त में खोते है। कितना ही चीखो चिल्लाओं, मिटते हम हरपल रहते है। सर्द गर्म के झौके आते, समझा समझा मन को हारा। मन को हरपल विचलित करते, दुख से कैसे करूँ किनारा?

चलता जा बस तू चलता जा, जब तक पैरों में ताकत है। खिलता जीवन गिरता जीवन, ना चलना बस नादानी है। चलता जा चलने में खो जा, जीवन की यही कहानी है। अपने दर्दों को मत गा तू, दर्दों से सनी कहानी है।

55ण

दुख छिपा यहाँ बस नहीं यहाँ, आंसू अनन्त में खोते है। कितना ही चीखो चिल्लाओ, मिटते हरपल हम रहते है। बेगाने से बन घूम रहे, आखिर जीवन की मंजिल क्या? चल चल कर कदम नहीं रूकते, रो रो कर हमने पाया क्या? क्या भूल हुई अन्धो बनते, ना ज्ञान रोशनी को पाया। जो समझा समझ नहीं पाया, देखा जीवन को कुछ पाया। ले ले अनुभव बढ़ते जाओ, देना है दोष यहाँ किसको। अपनी अपनी खेनी नैया, पड़ती दुनिया में है सबको।

56ण

आंसू के पानी को चख चख, तुम अपना आनन्द मनाओ। सारा जीवन रोकर काटा, तुम उसमें उल्लास जगाओ। कितना ही लूटो इस जग को, फिर भी जनता पीछे आये। नहीं नियति है साथ हमारे, कैसे तुमको सजा दिलायें।

नहीं थामना उसे कभी जो, बहते दुख की धारा में है। आस सदा ही रही अधूरी, बीते जीवन मजबूरी है। तेरे बयना रोवे नयना, दे दे कर उपदेश थके है। तुम्ही जलाते उनकी होली, जल जल कर सब राख हुए है।

किसको अपनी व्यथा सुनायें, अंखियों से यह नीर निकलते। निज चाहत में वह डूबे है, नहीं प्यार वह हाथ बांटते।

57ण

अश्रु गिरेंगे इन नयनों से, फूल खिलाना ही होगा। कांटों की है डगर जगत में, संभल संभल चलना होगा। प्यार ले लो प्यार दे दो, घृणा भाव को दूर करो। दो दिन की इस दुनिया में तुम, वैर त्याग कर प्रेम करो।

कटुताओं को विस्मृत कर मन, प्रेम गीत सुनाता जा। अन्धियारी रातों से ना डर, प्रेम दीप जलाता जा। गायें संग हम गीतों को, ले हंस तेरे हम भी संग। कहाँ होवे बसेरा न जाने, कितने ही जीवन के रंग।

जीवन आशा खोजूँ तुझमें, बिन प्यार नहीं कुछ पाया। जब था रूठा मेरा साया, तब मैने तुझको पाया। 58ण

जिन्दगी रो कर बिताई, नहीं जी सके न मर सके। साथी थे हम ना अच्छे, ना साथ तेरे चल सके। चाह मैने प्यार की की, काबिल नहीं पर हो सका। जा रहा हूँ झुलसता, शीतल न तुमको कर सका।

जिन्दगी बस चल रही है, रो रही ना हँस रही हैं। जा रहे तुमसे विछुड़कर, अब तुझे तो गम नहीं है। यही किस्मत है हमारी, ठोकरे बस मार्ग में है। दोष किसको आज दे हम, तन्हाई नसीब में है।

59ए

आंखों में आंसू ना लाती, दु:ख उठाये चलती जाती। कौन दर्द कितना बाटेगा, जो भाग्य मेरा न पछताती। कितनी रोई सब विमुख हुए, सपने मेरे सब चूर्ण हुए। किस्मत पर छोड़ दिया मुझको, सब हाय सहारे टूट गये।

सहमी सहमी सी चलती हूँ, उर में भय आज समाया है। कहीं एक शब्द न जाये निकल, लड़ता मेरा अब साया है। लिये प्यार की भूख विवश मैं, पत्थर सी चलती आंखे ले। इस बुझे हुए दिल को जाने, कैसे धारती गोदी में ले।

समझा समझा मन को हारी, जीवन मेरा है लाचारी। कट जायेंगे सारे दिन यह, दो दिन का मेला क्या यारी।

60ए

बहते आँसू मैं किसको दूँ, चाहूँ खुशियाँ जग में भर दूँ। दुनिया की गति विधि देख रहा, दिल भावुक सा मैं किसको दूँ? मैं गिरा गिरा सा जाता हूँ, मुझको अब संबल दे साथी। निज को प्रतिपल मैं देख रहा, अपने साहस को खो साथी। अपने अपने कर्मों का ाल, सब भोग रहे हैं इस जग में। तुम बोलो दोष किसे दे हम, आंसू आते इन नयनों में। क्यो व्यथा उमड़ कर होठों पर, आकर मेरे रह जाती है। लेकर मेरी मुस्काहट को, किस निर्जन में छिप जाती है।

किसे खबर है कहाँ लगेगी, यह जीवन की मेरी नौका। मौत जिन्दगी के पलड़े में, यह खेल रही जीवन नौका। दिल मेरा आज बुझा साथी, सुपने मेरे सब चूर्ण हुए। दिल की अब ज्योति जला साथी, अरमान मेरे सब नष्ट हुए।

इस विशाल दुनिया के अन्दर, प्रतिपल हम धोखा खाते हैं। पागल बन कर हम बहक बहक, िर भी न मोह तज पाते है। सब गाते गीत खुशी के है, दुख में सब ही रो लेते है। अपनी अन्तिम मंजिल पर सब, चुपचाप सदा रह जाते हैं।

क्यों आज हुआ मानव दानव, शुभ कर्मों को क्यों भूल गया। क्यों तज अपनी गौरव गरिमा, निस्हाय दीन सा विलग रहा। साथी तू ले चल मुझे वहाँ, जहाँ गम का नाम निशा न हो। मैं छिपा रहूँ बस तुझमें ही, मुझको बस अपना होश न हो।

61ए

बीती क्यों नीर बहाता है, सोंचे क्या सब कुछ मिटता है। जीवन के रंग हजारो हैं, किस रंग में रंग कर बैठा है। नभ में तुम दृष्टि उठा देखो, आकाश में रंग अनेंको है। सूरज की प्रखर रोशनी में, मिटते ही रंग अनेंको है।

नहीं पकड़ने जैसा कुछ भी, बहो बहो सागर तरंग में। जग तरंग सुपना तरंग है, सब कुछ तरंग है इस जग में। कहने को कुछ भी नहीं यहाँ, करते करते सब खोता है। बहती जाती बस बह ले तू, जीवन की यह जो नदिया है। 62ए

आंखों के नीर किसे दे दूँ, मन मेरा यहाँ नहीं लगता। मैं पाऊँ जहाँ में ऐसा क्या, पाने को कुछ भी ना लगता। अपना कुछ लगता नहीं यहाँ, सब कुछ ही तो बेगाना है। जीवन के कडुवे अनुभव से, जाना हमने यह माना है।

फिर फिर के सब ही कहते है, सब माल यहाँ का अपना है। सच्चा सा लगता है हमको, पर जग सारा यह सुपना है। सब खेल शून्य का इस जग में, मन मेरा शून्य न क्यों होता। वासनाओं के चक्कर में गिर, प्रतिपल कीचड़ में यह पड़ता।

पीड़ित लगते है सभी यहाँ, पीड़ा किसको हम दिखलाये। जख्मों से घिरे यहाँ बैठे, स्वर वीणा नहीं उठा पाये। यह नियति बनी कैसी मेरी, पल पल में आंसू आते हैं। कुछ समझ न पाता मन मेरा, बस चुभन मुझे दे जाते है।

जीवन पथ पर बढ़ते जाते, नित नई नई ले आशायें। जीवन नौका इस प्रयास में, कब पता नहीं लय हो जाये।

63ण

आंखो के आंसू देखो मत, दीन कहो ना जो भी किस्मत। प्यार के झूठे रागों में तुम, मुझे फंसाओ अब दुनिया मत। जीवित जलता जग में रहकर, अरमानों का धुंआ उड़ा कर। मुझे जला लो कितना दुनिया, जलकर भी हँस दूँगा तुझ पर।

अच्छा ही किया जो भूल गये, तुम नाता मुझसे तोड़ गये। इस जग की रीति सिखा कर तुम, मंजिल को मेरी दिखा गये। तुमने निष्ठुर दिल से ठुकरा, अहसान किया मुझ पर भारी। जागृत कर मेरा स्वाभिमान, दिखा दिया पथ था भारी।

पिंजड़े का पंक्षी घायल है, उड़ने में भी डर लगता है। ना कोई समझता है तड़फन, धीरज धार पथ भी मिलता है। 64ण

आंचल को मुख में दाव दाव, धीरे धीरे वह रखती पग। अपनी मुस्काहट से सबको, जख्मी कर देती है वह जग। सुन्दर सा रूप गढ़ा प्रभु ने, तेरी सब अदा निराली है। सारे जग को तू हँस हँस कर, अंगुली पर नाच नचाती है।

कवि कविता रचते रहते है, तेरे गुण गाते रहते हैं। चित्रों के अन्दर चित्रकार, तेरा रंग भरते रहते है। यो)ा तुझ सम्मुख बड़े बड़े, भीगी बिल्ली बन जाते है। एक इशारा चुभन भूल कर, अपनी वह जान लुटाते हैं।

देखो वह प्रेम पुजारी बन, कैसे निहारता देवी को। मीठे मीठे शब्दों को चुन, खुश करता अपनी देवी को। देवी तू धान्य धान्य देवी, तुझ सम्मुख शीश झुकाता जग। चहुँ ओर उठा नजरें देखा, गुण तेरे ही गाता यह जग।

तेरी बाहों में झूम झूम, जब केशों को वह सहलाता। सौन्दर्य देख उस देवी का, मदहोशी में वह छा जाता। बींधा हृदय देती वह जब, अच्छा निहारना तब लगता। खो कर वह अपनी मस्ती में, घायल उस क्षण वह हो जाता।

दिखला कर जब जब वही अदा, हँस मुँह में आंचल लेती है। बिजली सी जाती कौंधा तभी, अन्त स्थल में छिप जाती है। अद्‌भुत कांचन सी काया ले, धीरे धीरे जब रखती पग। छवि को निहार इन नयनों से, विस्मृत हो जाता उस क्षण जग।

प्यारी बातें प्रिय की सुनकर, आँसू खुशियों के छलके तब। बाहों में प्रिय की खो जाऊँ, विनती करती मैं तुझसे रब।

65ण

किसे सुनायें प्रेम कहानी, बहता इन अंखियों से पानी। जख्मी हो कर फिर भी चलता, दुख की मेरी भरी कहानी। क्यों तुम भाव विह्‌ल हो कर मन, उस अतीत को याद कर रहे। कटुतायें जीवन में होती, विस्मृत तुम क्यों नही कर रहे। ूल खिला मन तू कांटों में, जीवन सौरभमय होवेगा। जग हँस दोगे वह हँस देगा, पास न रोवोगे आयेगा। बैठे किसकी करें प्रतीक्षा, जीवन के इस वीराने में। आंखें ये रो भी ना पाती, इन पथरीले दिलवालो में।

बन न सका मैं प्रीति पुजारी, बहक बहक कर मैं रोया हूँ। लिये प्यार का रीता घट मैं, अपने पथ को भूल गया हूँ। अपना अपना दुख है सबका, सारे रोते दीखें जग में। ज्योति जगा निष्काम कर्म की, मन चलते जाना जीवन में।

66ए

प्यार करें किसको हम जग में, ठुकरायें किसको हम मग में। कैसे पार करें ना जाने, व्यथा समुद्र लहराता घट में। मन रो मन रो आज खूब रो, पीड़ा में अपनी तू बह जा। खूब लुटा शबनम से मोती, अंसुवन की नदिया में बह जा।

घायल पिंजड़े का पंछी है, उड़ने में भी डर लगता है। तड़ समझता ना कोई है, घुट घुट कर वह रह जाता है। तड़ हमारी वह ना जाने, क्यों जीते हैं हम इस जग में। स्वारथ के चक्कर में पड़कर, तोड़े दिल सोंचे न दिल में।

67ए

नहीं बनो निर्मोही छलिया, छोड़ मुझको जा रहे हो। दुख ना देना चाहूँ तुमको, क्यों दुखित तुम हो रहे हो? यह स्वर नही वीणा उठाती, चाहें स्वरों को उठा दे। जायें कहाँ बोलो जगत में, ढूंढ हम मुस्कान दे दें।

नहीं तुमसे कोई शिकवा, खेल कैसा चल रहा है। चाहता संग खेल भी लो, संग छूटा जा रहा है। आंखो के आंसू मैं देखूँ, कर मैं कुछ पाता नही हूँ। पीड़ा को मैं हर न पाता, क्या नियति अपनी यही है। 68ए

ज्ञान नहीं आगे क्या होगा, जीता हूँ बस मैं इस पल में। बना अजनबी चलता रहता, छिपे हुए हो तुम अन्तस में। ढूंढ रहा मैं निज को निज से, फ़िरता, हुआ बावला सा हूँ। कैसा तुमने खेल रचाया, अवश हुआ सा मैं फ़िरता हूँ।

काम क्रोधा मद लोभ मोह से, मैं सबसे ही पीड़ित हूँ क्यों? पाप पुण्य मैं नही जानता, निज से हाय अपरिचित हूँ क्यों? खुद ढूढूं ना खुद को जानूँ, कैसा विचित्र खेल रचा है। अवश हुए हम चिल्लाते है, क्या जीवन का यही मजा है।

पीड़ित होते हैं हम दुख में, सुख ना खोले आंख हमारी। युग बीते ना मिटी प्रतीक्षा, जीने की क्या प्यास हमारी।

69ए

ढर ढर आंसू ढलका कर हम, फ़रियाद किसी से करते हैं। चलना चाहें चल ना पाते, इस मग में कौन विवशता है। मैं खोज रहा निज को निज से, पर पता नहीं कुछ भी पाया। बैचेन क्षणों में बस अपना, टूटा दिल ले मन बहलाया।

चाहा बनता वह मीत मेरा, न मीत मेरा वह बन पाया। उलझन में रहा उलझता मैं, ना रो पाया ना हँस पाया। चाहा चलना मैं साथ चलूँ, पर रूखा दिल ले मैं हारा। अपने ताने बाने में फ़ंस, थक गया नियति आगे हारा।

शतरंज विछी सारे जग में, चालों पर चालें चलते हैं। देखें हम टुकर टुकर सबको, आंखों में आंसू पलते है। क्या गलत कहें क्या कहें सही, जीवन का कैसे ले लेखा। देखी रातें, दिन भी देखा, पल में परिवर्तन को देखा।

उठती गिरती इन लहरों को, मैं मौन बना नभ देख रहा। अरमानों की होली जलते, बहते नयनों से देख रहा। साहस की डोर पकड़ तू मन, बढ़ जीवन को जी कर जाना। करते करते शुभ कर्म यहाँ, इस नियति खेल में खो जाना। 70ए

आँसू ढरका पर गाता जा, दर्दों की चिता बनाता जा। तू गिरे वहीं मन्जिल तेरी, शिकवा ना कर बस गाता जा। जीवन की इस पगडण्डी पर, देखा ना साथ था हम साया। टूटा सीने में ज्वार यहाँ, उसमें बस मैं जल ही पाया।

मीठे मीठे सुपने लेकर, चाहा कुछ मीठी बात करें। ना कुछ भी हम फरियाद करे, यादों की हम बरसात करें। चाहा तुझको पर ना पाया, तुझ ओर बढ़ा न चल पाया। जीवन की इन घड़ियों में भी, रोया पर गीतों को गाया।

71ण

आंसू आयें तो रो लेना, घट में आशा का दीप जला। इस भूल भुलैया जीवन में, गम भूल यहाँ पतवार चला। चलता जा तू बस चलता जा, मंजिल तो बस चलना ही है। उठना गिरना मिलना खोना, जीवन की यही कहानी है।

नित नये नये परिधाान ओढ़, यह जगत शून्य में नाच रहा। लेने को सुख की एक झलक, पीड़ा का सागर उबल रहा। चाहत भी है बेमेल हुई, इस पथ को कैसे पार करें। कैसा जीवन जो उलझ रहा, रो रो आँखियों से नीर गिरे।

अपने ताने बाने में फंस, इस मति को कैसे समझाऊँ? व्याकुल रहती है यह हरपल, कैसे धीरज मन में लाऊँ? जीवन में साहस को लेकर, धीरे धीरे बढ़ते जाना। मन सिलग रहा निज पीड़ा से, पर धौर्य कभी ना खो देना।

72ण

आंसू की लड़ियों के पीछे, छिपी कहानी बहुत यहाँ हैं। किसके दामन को थामें हम, आशा सारी बुझी हुई है। परिवर्तित जग यह हरपल है, अपना कोई नही पराया। इस चाहत के मेले ने ही, सारा है यह स्वांग रचाया। अपना अपना भाग्य यहाँ है। चलते जाना चलकर खोना, चलना खोना खेल यहाँ है। कुछ भी नहीं यहाँ पर थिर है, चल विवेक से साहस लेकर। शूल खिला कांटों में रहकर, आने जाने के मारग पर।

73ण

बैठे यहाँ किनारे पर हैं, कब हवा उड़ा कर ले जाये? यदि बिछुड़ गये हम एक बार, फिर कभी नहीं हम मिल पायें। सुन्दर सुपनों की दुनिया को, आंसू से हमने हैं सींचा। ना प्यार मिला तड़पा यह दिल, जाओगे छोड़ नहीं सोंचा।

चलता हूँ पर गन्तव्य नहीं, ना जान सके मन्जिल क्या है। चलता हूँ बस चलता जाता, जीवन तो बस इक सुपना है। साथ न देता कोई दुख में, साथी बन जाते सब सुख में। छोड़ यहाँ पर भरी भीड़ में, ओझल हो जाते वह दुख में।

शूल खिल रहे जग में प्रतिपल, नहीं प्रयोजन कोई पाया। क्षण भंगुर आनन्द मनाया, बटती सुगन्धा निशा न पाया। नहीं प्रयोजन खोज यहाँ मन, दे सुवास फिर खो जा जग में। आंसू का लहराता सागर, बांट सके सुख दे दे जग में।

74ण

आशा का दामन पकड़े हम, जीते मर मर कर निशदिन है। क्या प्यास लिये हम घूम रहे, विष की घूंटों को पीते हैं। जायेगी कहाँ नाव मेरी, न कोई किनारा पाता हूँ। चहुँ ओर देखता नजर उठा, अंधाा सा बढ़ता जाता हूँ।

पीड़ा के सागर में डूबा, अपनी पीड़ा न कह पाता। निज लपटों में मैं झुलस रहा, ना झरना कोई मिल पाता। पथ के शूलों से विचलित हो, मन कदम कदम पर चिल्लाता। फिर भी गाता गीतों को मैं, इस मन को हरदम बहलाता।

मन समझ समझ सागर गहरा, जीवन जी ले कर उसे हरा। उठती गिरती लहरों में बह, ले जाये नदी आंसू न गिरा।

75ण

कौन यहाँ आँसू पोंछेगा, निज को समझाना पड़ता। दंश अनेकों इस पथ पर हैं, चलना रोकर भी पड़ता। पागल मत बन दूर लक्ष्य है, जीवन की यही कहानी। चलता जा अविरल इस पथ पर, दे अपनी एक निशानी।

जीवन नदिया बही जा रही, कहीं रूदन कोई गाये। सबके अपने अपने सुपने, अपनी अपनी आशायें। चाहत संजो संजो कर हारा, किस्मत ने किया किनारा। आशाओं को ले पर चलता, नहीं जिन्दगी से हारा।

76ण

आँसू को किसने देखा है, चाहत पर मिटते रहते है। ख्वाबों में फिर भी जीते है, टूटे दिल को ले रोते है। आँसू से भीगी आंखे ले, चलते चलते गिर जाते हम। सम्बल हम माँग रहे किसका, जो रूला रहा प्रतिपल हमदम।

आँसू के सागर में डूबा, मन्जिल को समझ नही पाया। क्या खोज चला जग में लेकर, निशदिन चाहत में भरमाया। थक हारे नयन हुए सूखे, किसके आगे अब हम रोये। बाजी मैं हार रहा हरपल, सुपनों में अब भी हम जीये।

आता ना पानी पर रोवे, न दीखे हमको कोई डगर। किसको पकड़े किसको छोड़े, जाये किश्ती ना पता किधार।

77ण

थक गये हम चलते चलते, न पता कहाँ जायेंगे। कौन सी खुशबू की चाहत, खोजते मिट जायेंगे। नयना आंसू से भरे हैं, मेरी अनजानी डगर। बीतता हरपल यह देखे, खोई है मेरी डगर।

खोजते खो जायेंगे हम, चाह की भट्टी में जल। छिपे तुम छिपकर ही रहना, देखना नहीं अश्रु जल। खोजता मैं चाहा तुमको, बनते क्यों हो बेका। टूटी मेरी आस जाती, तुम भी हो मुझसे खा। थाम ले तू मुझको निष्ठुर, तू अब नहीं मुझको सता। डूबता चला जा रहा हूँ, नहीं किनारा दीखता। आँख यह पत्थर हुई है, दिल भी मेरा खो गया। इस वीराने में भटकता, मुझको क्या कुछ हो गया।

यह जिन्दगी तो जा रही है, खो रही सुपनों में है। प्यार की इक बूंद पाने, तड़े बस यह यहाँ है। गले लगा ले हम सफर तू, खत्म यह रैना होगी। गुजरता सभी जा रहा है, दिल को ना चुभ न होगी।

78ण

नीर ढुलकाना नहीं तुम, याद आयें तो कभी। जाओ तुम अब भूल हमको, ईश की मर्जी यही। जिन्दगी कैसी हुई यह, खुश तुम्हें न कर सका। नयन के दो दीप जलते, क्यों नहीं मैं मिट सका।

कहें क्या किस्मत हमारी, जी रहा ना मर रहा। कौन तू मै, भूल क्या है, जहर को मैं पी रहा। प्यार की ले भूख दिल में, देख पीछे दौड़ता। विमुख क्यों मुझसे हुए तुम, सारे नाते तोड़ता।

खुश रहो तुम जा रहे हम, भाग्य मेरा है यही। संग तेरे चल सके नहीं, मेरी लाचारी यही। नियति की है क्रूर आँखे, छोड़ तुझे दिल जलता। प्यार के दो गीत गाता, संग तेरे दिल लगता।

कोई मन्जिल ना अपनी, क्यों घुटन में जी रहे। मचलते अरमान दिल में, न दोष तुम्हें दे रहे। याद कर सुपने सुहाने, काट देगे जिन्दगी। जाओ तुम अब भूल हमें, खेल खेले जिन्दगी। 79ण

अश्रु की गंगा में बहते, डूबते ना तैरते। जाये कहाँ पर चल यहाँ, हम ठिकाना ढूंढते। चाह कर भी चल न पाते, किस विवशता में फंसे। स्वप्न सारे टूटते हैं, पर उसी में हम धांसे।

कुछ कदम तक साथ दो तुम, बन सके रंगी समा। अन्त तो तन्हाई ही है, बुझ रही है यह शमा। बीत जाये जिन्दगी यह, करो तुम फलत नहीं। तुम हमें आवाज दो तो, खड़े है हम बस यहीं।

80ण

आँख तुमने मूंद ली है, जी भरा देख मितवा। दर्द लेकर चल रहे हैं, न करें तुमसे शिकवा। प्यार पाने के लिये सब, छटपटाते जीव हैं। नियति सबकी है यहाँ पर, बहे अखियां नीर है।

कितने ही अरमां पा ले, जिन्दगी बह रही है। वासना पूरी न होती, आंख फिर झर रही है। चलते हैं जख्मी दिल ले, जानते ना मुकाम को। बनता हरजाई इतना, देखता ना आंख को।

81ण

पोंछ यहाँ पर आंसू अपने, जीवन एक कहानी है। बढ़ता जा तू देख यहाँ पर, मंजिल तुझे बुलाती है। टेढ़ी मेढ़ी पगडण्डी है, तुझको बढ़ना ही होगा। जीवन का संगीत जान ले, गाना तुझे इसे होगा।

बीज वृक्ष होने को चलता, नये नये अरमान लिये। पथ में कितनी करवट लेता, जीने का सौन्दर्य लिये। अनंत रूकावट बीज पार कर, धीरे धीरे बढ़ता है। श्रोत खोजता वह धारती में, तभी वृक्ष वह बनता है। 82ण

अँखियाँ रोई पर रो न सके, जीवन जीया पर जी न सके। तेरी ओर निहार रहे हम, तुझे भी नही पहचान सके। अन्तस की पीड़ा कहें किसे, पीड़ा का है अम्बार लगा। झूठी न तसल्ली मिल पाई, मंझधाार बीच वह छोड़ भगा।

यह कदम लड़खड़ाते मेरे, मैं देख रहा कोई थामे। न सुने कोई मेरी जग में, न हो उदास मन गा नगमे। तू उठा बांसुरी गीत सुना, अपनी मिठास फैलाता जा। नयना रोये सुख भी बरसे, जग को मन तू हर्षाता जा।

83ण

अच्छा न किया जो छोड़ गये, वादा करके तुम भूल गये। इन अंधियारी रातों में तुम, दिल का दीपक बुझा गये। संग स्वप्न संजोये थे तुझसे, आशा के महल बनाये थे। सब मिटा गया तू निर्मोही, क्या हमें रूलाने आये थे।

जीवन में भूल सकेंगे ना, यादें तेरी ले रो लेंगे। तोड़ा प्रीति का बन्धान तुमने, रो रो कर समय गुजारेंगे। दिल मेरा यह भुला न पावे, आओगे विश्वास जगा है। जनम जनम का रिश्ता अपना, किस होनी ने हमें ठगा है।

84ण

खेल खिलाये होनी ऐसे, जान नहीं कोई पाये। जिसको होना हो राजतिलक, जंगल में ठोकर खाये। वर दशरथ कैकयी दीन्हा, जान जिगर का टुकड़ा है। बनी हाय फिर वह ही सापिन, गई भूल वर मेरा है।

जिसे सहेजा सारा जीवन, दिल की पीड़ा भूल गई। गुजर रही क्या उसके मन में, धास स्वारथ में डूब गई। नयना रोये वह ना देखे, ऐसी भी क्या रीति हुई। परिवर्तित जग के मेले में, खेल यहाँ सब छुई मुई। 85ण

अश्रु नयन के पीने होंगे, दर्द शूल सब सहने होगे। साथी जो भटक रहे तेरे, संग कदम बढ़ाने ही होंगे। कुहरे में सब है ढका हुआ, चलकर ही पथ पाना होगा। जीवन की गति बस चलना है, यह सत्य समझना ही होगा।

मंजिल दूर सही पथ दुस्तर, चलने बाले तो चलते है। आशा और निराशा के, चाहें बादल मंडराते है। धूप छांव का खेल समझ कर, चलते जाओ आलस त्यागो। निज प्रयास कर धीरे धीरे, बढ़ते जाओ पथ न त्यागो।

86ण

आँख के तू अश्रु पी ले, जिन्दगी का खेल जी। जगत में तू खेल ऐसा, दे हँसी संग साथ जी। बहा जाता सब यहाँ पर, थिर नहीं कुछ भी यहाँ। पल मिले जो दे दे खुशियाँ, प्यार का भूखा जहाँ।

सब इसी को मांगते है, ईश से भी माँगते। क्यों विमुख तू हो रहा है, दिन है दो सब जानते। चाहते सबकी अलग हैं, क्या बुरा है मानना। निभा दे जो भी यहाँ है, सुर मिला कर खेलना।

87ण

चल निभा दे तू यहाँ पर, हर सुबह है ढल रही। छोड़ अपने अहम् को, जिन्दगी यह जा रही। प्रेम के दो शब्द से ही, जगत यह है चल रहा। इसी की है भूख सबको, कृपण बन क्यों रो रहा?

चला जा तू इस डगर पर, आंसुओं को मोल दे। अपनी धुन में चलता जग, धुन इसी में प्यार दे। प्यार दे दे अश्रु ले ले, अर्चना इसकी करो। कौन जाये कब विछुड़ तुम, याद बस इसकी करो। 88ण

आँखे सूज गई रो रो कर, वह मिलें नही बेगाने है। कैसे मन को हम समझाये, अपनी सबकी इच्छायें है। कैसी विडम्बना जीवन में, रो रोकर चुप होना पड़ता। इसी शून्य में कितना चीखो, सम्बल निज को देना पड़ता।

ना गीत प्यार के सुना सके, दिल तोड़ा मैं खुद भी रोया। कौन गलत था कौन सही था, तेरी यादों में ही खोया। गीतों को गाते जायेंगे, अतृप्त प्यास को हम लेकर। आँसू से लिखते जायेंगे, जो टीस ऊनती है अन्दर।

89ण

देखूँ मैं जहाँ बहे पानी, चाहत ले अंखियाँ रोती। विविधा स्वरों में इस गंगा में, सुना रहे अपनी बीती। विवश बह रहे धारा में हम, जाना ना जीवन क्या है? गम के मेलों से गुजर रहे, ना जान सके यह क्या है।

चाहा हमने ना दुख देना, तुझे नहीं सुख दे पाये। देखो मेरी मजबूरी को, नीर न तेरा पी पाये। बह रही हजारो नदियाँ है, सागर में खो जाती है। कुछ समय यहाँ पर बीत रहा, गगरी डूबी जाती है।

90ण

आँखों ने आंसू बरसाये, धारती ने पीना सीखा। इस दुनिया में रहा भटकता, कोई ना रस्ता दीखा। खूब लुटाता मै खुशियों को, संग गीतों को भी गाता। ऐसा हुआ मैं किस धूरी में, पीड़ा को ना हर पाता।

छिपी बीज में मन्जिल उसकी, नहीं बीज यह जान सका। सींच रहा है उसको कोई, नहीं हाय पहचान सका। विवश हुए से चलते है हम, इस जग में भरमाते हैं। जान सके न मन्जिल चलती, सोंच रहे हम चलते हैं। 91ण

थक गये हम चलते चलते, न पता कहाँ जायेंगे? प्रेम से तुम देख लेते, फिर नहीं मिल पायेंगे। कदम मेरे ना संभलते, क्यों विमुख मुझसे हुए? गीतों को कैसे उठाऊँ, स्वर मेरे खंडित हुए।

तुम न आये मैं तो हारा, थकी अंखियाँ हमारी। तोड़कर रिश्ते छिपा तू, नयन से आंसू जारी। टूटते अरमान देखूँ, छोड़ हमें जा रहे हैं। पीड़ा हम किसको सुनाएँ, देखो हम रो रहे हैं।

92ण

चल अकेला इन्तजा क्या, वासना सबकी अलग है। प्यार से देखो सभी को, चाहें राह सब अलग है। मत उलझ मन सुर अनेकों, विक्षिप्त वह कर जायेंगे। चलते रहे यदि राह पर, मन्जिल मन तुम पाओगे।

झड़ गया यदि बीच मग में, न कर्म भीरू कहाओगे। संघर्ष कर बीज बढ़ता, पेड़ सा लहराओगे। कर्म से मत विमुख होना, धाडकने यह कह रही है। आती बाधाएँ मग में, नदी बहती जा रही है।

93ण

मेरे आँसू को देखा ना, जो हरपल यह झर झर झरते। निष्ठुर बन कर तुम छोड़ गये, ना कुसुम यहाँ पर अब खिलते। खुश रहो सदा तुम जहाँ रहो, यादों में बस हैं दिन कटते। पथ मेरा यहाँ हुआ दुस्तर, जब से विछुड़े हम तो रोते।

तुम भूल गये ना भूल सके, जीवन में तुमको है खोया। बिखरे स्वर गीत हुए खण्डित, मैं फवक फवक कर हूँ रोया। बहते आंसू मन सुमन खिला, पीड़ाओं से पीड़ित जग यह। सब छूट रहे हैं, कूल यहाँ, ना घबरा तू जीवन है यह। 94ण

जग आंसू से सींच रहा है, किस पथ को मन खोज रहा है। लूटपाट की इस दुनिया में, शान्ति खोज में भटक रहा है। कैसे बहलाये मन अपना, बहता पीड़ा का सागर है। पूरी होती भूख कभी ना, टूटे दिल यह मन रोता है।

लांघें कैसे दुख का दरिया, पागल बनकर घूम रहे है। प्यास भूख दारिद्र यहाँ है, टूटे सुपने तड़ रहे हैं। दंश अनेकों कांटे पथ में, खिलता फिर भी फूल यहाँ है। बन कर फूल लुटा सौरभ को, जर्रा जर्रा हर्षाता है।

95ण

अँखियाँ नीर गिरायें झर झर, ऐसी भी क्या अपनी करनी। टूटा दिल पर हम ना टूटे, चलते रहे डगर पर अपनी। चल गिर कर हम उठ जाते हैं, खोज रहे हैं अँधियारे में। कभी मिलोगे आशाएँ ले, जीते हैं इस गलियारे में।

चुभन हमें जो तुमने दे दी, प्यारी अब वह भी लगती है। संग मेरा तुम छोड़ गये हो, यादें साथ मेरा देती है। सावन आया चला गया पर, कूकी कोयल ना डाली पर। तन्हाई ने नाता जोड़ा, मन किसे दिखाये हम रोकर।

96ण

क्या कहती आंसू की लड़ियाँ, बस याद हमें तू आता है। एकाकी जीवन अब मेरा, चलती पीछे बस छाया है। गम भूल गये जब मिले यहाँ, आशाओं ने अंगड़ाई ली। छिप बैठ गया किस कोने में, क्यों सुधा तूने मेरी ना ली।

तुझसे था हमने प्यार किया, चाहा दुख कोई आये ना। कितना जाम पिला दुख का, उत्तर कुछ भी देवेंगे ना। नाव यहाँ खाती हिचकोले, सागर में यह कब खो जाये। मुस्काहट तेरे होठों की, हे ईश कभी ना यह जाये मिले यहाँ जायेंगे कहाँ, दीखे न कोई किनारा है। बीते दो पल तेरे संग जो, जीने का वही सहारा है। तुम रूठ गये हम टूट गये, देखो कैसा यह खेल चला। शिकवा हम करें बता किससे, जीवन से भी ना कोई गिला।

97ण

पल पल में आंसू आते हैं, न याद तुम्हारी जाती है। छिप गये कहाँ प्रियवर मेरे, स्मृति बीती वह रूलाती है। बीतेगा कैसे कठिन स्र, धाक धाक करती मेरी छतियाँ। अँखियाँ हारी तक तक रस्ता, ना भूल सके तेरी बतियाँ।

जी हम न सके न मर ही सके, ना जोड़ सके तुझसे नाता। अपनी पीड़ा कहते किससे, सब दर्द शून्य में खो जाता। ढुलकेंगे अश्रु सदा ही यह, फीका लगता तुम बिन जीना। चाहें तुम लेना नयन फेर, मेरे गीतों को सुन लेना।

98ण

पूछना मत गिरते आंसू, कांटों में उलझे हुए। किस चाहत से चले थे, जगत में भरमा गए। गम खुशी का खेल है यह, सभी अरमा टूटते। चले जाना है यहाँ पर, देखते ही देखते।?

खिलखिला ले और रो ले, कुछ रहेगा ना यहाँ। देख ले सुपने सुहाने, जाने न जायें कहाँ? तुम गये हो भूल हमको, नहीं भूलेंगे कभी। दीप अब बुझने लगा, न मिलेगे फिर कभी।

99ण

जिन्दगी में चल रहे हम, गम नहीं पहुँचे कहीं हम। धाड़कता यह दिल हमारा, दिन रात चलने की कसम। सृष्टि सारी चल रही है, यह कहाँ पर जा रही है? प्यार का भूखा रहा दिल, आँख मेरी रो रही हैं। तुमने मुझसे मुँह को मोड़ा, कुछ पलों की है खुमारी। देखना ना झरती आँखें, कसम है तुमको हमारी। बीत जायेगी उमरिया, मत उड़ाना तू चदरिया। नाम लेंगे रोते रोते, टूट जायेगी गगरिया।

100ण

एक गम हो तो कहें हम, गम अनेंको हैं यहाँ। कांटे बिखरे अनगिनत हैं, फूल भी खिलते यहाँ। पीड़ को दिल में समेटे, बुलाता कोई तुझे। दर्द को यदि पी सको तो, अश्रु सुख देगे तुझे।

अनेको आंखियाँ रो रही, प्यार को वह तरसती। प्यार की गंगा में बह जा, फूल खशबू महकती। पाना क्या संसार में है, सब यहाँ पर बह रहा। नीर पोंछे तू किसी के, देख वह मुस्का रहा।

जग की खुशियों में जी ले, फूल जग में तू खिला। जा रही यह जिन्दगी है, क्या किसी से है गिला।

101ण

किस जगह जाऊँ बता दो, कर सकूँ दीदार तेरा। शाम ढलती जा रही है, आशा क्यों तू है मेरा। दो कदम चलना कठिन था, क्यों हुआ बैचेन मन था। छूटते जाते किनारे, गम न कर विधिा खेल यह था।

सुपने कितने संजोये, जिन्दगी में साथ देते। बेका तुम हो गये पर, खड़े हम तो राह तकते। जिन्दगी का खेल प्यारे, कुछ समय का यह मेल है। पागल रोता क्यों मनुआ, कुछ नहीं अपने हाथ है।

नीर बहते देख उनको, पीड़ पर तू दे न उनको। भागता जाता समय है, दे सदा मुस्कान उनको। खेल कुछ पल खेल ले तू, करना शिकायत छोड़ दे। स्वर उठे जो दर्द के मन, उसमें अमी को घोल दे।

102ण

पागल मन कैसे समझाऊँ, चल चल कर मैं गिर गिर जाऊँ। बहती नयनों से जल धाारा, बिन पिव पल भर ना रह पाऊँ। छोड़ा हमको गये ठगे हम, नयनों में मेरे तुम्ही बसे। छलिया इतना छल क्यों करता, तू दर्द बता हम कहें किसे?

आती यादें तेरी हमको, पल भर चैन मिले ना हमको। इन सांसों में तू ही बहता, चाह प्यार दे चाहें तुमको। कितना रोये कितना चीखे, हाय नहीं पर हमको दीखे। उड़ती राख यहाँ आशा की, जायें कहाँ मग नहीं दीखे।

तुम बिन सब कुछ सूना लगता, किस तरह मनायें हम तुमको। टूट रही, सांसों के खेवट, नहीं भूल पाते हैं तुमको। जीवन की तू ही है आशा, न भूल पाई मैं तुझे पिया। चाहत एक हमारी है बस, नयना प्यासे तू देख पिया।

103ए

जिन्दगी का गीत गा ले, जो मिला खुशियाँ मना ले। जाती संधया यह ढलती, कर न शिकवा दिल लगा ले। दर्द पी हँसे ले मुसाफिर, चाहते सब प्यार पागल। जिन्दगी कुछ पल मिले है, होता रोकर तू गाफिल।

सोये स्वरों को जगा ले, प्यार की वंशी बजा ले। जानो ानी यह दुनिया, कर न शिकवा गुनगुनाले। नहीं माने बैचेन दिल, नित आ रहे आंसू नये। क्या करेंगे हम शिकायत, शिकवा की मूरति हम हुए।

*दर्द का दरिया ऊनता, हाय मन पागल मचलता। कैसे समझाऊँ इसको, देखो सूरज है ढलता। कौन जो मेरी सुनेगा, चल चल गिरे आँसू बहे। खोज कर हारा थका मैं, किससे बता छलिया कहें।*104ए

दर्द तुमने दे दिया है, दर्द हमने ले लिया। बैचेन दिल यह रो रहा, मानता ना यह जिया। डगर मुश्किल है जगत की, चल रहे चल चल गिरे। नयन से आँसू न सूखें, तू बता हम क्या करे।

प्यार की दो बूँद पाने, हम भटकते ही रहे। ना उठा कर आँख देखा, भाग्य क्या अपना कहें। डगमगाती नाव बहती, लुप्त कब हो ना पता। ना तुझे हम भूल पाये, मफ करना यह खता।

इस क्षितिज के पार देखो, कौन है मुस्का रहा। स्वप्न सी यह जिन्दगानी, थिर नहीं कोई रहा। प्रीति की बगिया सजाते, हृदय में ूल खिलते। जाने न रूठा चमन क्यों, पीड़ा दिल की कहते।

105ए

बैचेन मन क्या ढूंढता, खोई हुई है मंजिलें। दिल में लिये तूफान को, घूमा बहुत न राह मिले। कितने बहाये नीर यह, देखा नयन से ना हमें। काली अंधेरी रात में, यह टीसता है दिल गमें।

जाऊँ कहाँ ना है पता, कुछ भी नहीं है सूझता। दो बूंद मिले प्यार की, इस प्यास को जिय तरसता। खोज कर हारे यहाँ हम, निर्मोही तू गया कहाँ। नीर आँखों के भुला कर, सुनसान कर गया जहाँ।

*क्यों टीसती है यह कमी, जाना है जा रहे सभी। पागल यह मन न मानता, नजरों से देखना कभी। मेरा चमन वीरान है, सारी सुगन्धा खो गई। टूटा हुआ ले दिल फिरूँ, कब भोर आयेगी नई।*106

झूठी ही तसल्ली मिल जाती, चाहें हम दूर नहीं होता। तेरी यादों में डूबे हम, रस्ता तो फिर यह कट जाता। जियरा मेरा घबराता है, ना जाने क्या मेरी मंजिल। नयना आँसू ढलकाते है, क्यों होता फिरता मैं गाफिल।

ना प्रीति बढ़ा पाया तुमसे, जीवन को अर्थ न दे पाया। जलता ही रहा इस जीवन में, ढूंढू ना मिलती है छाया। सुपने नयनों में गिरे उठे, किसको बोलें हम किसे कहें। सब बहते जाते निज धुान में, तू थाम हमें हम यही कहें।

कैसे समझायें इस मन को, ठोकर पर ठोकर खा रोया। जल रही शमा ना परवाना, बन सका, प्यार को है खोया। बैचेन है दिल न जाने कल, क्या कोई प्यार से देखेगा। घुटती जाती मेरी सांसे, क्या कभी अमी भी बरसेगा।

107

जो भी पल हैं देख सामने, क्यों अतीत में जावे मन। सुपना सा सब बीता जाये, नहीं बचेगी कोई धुन। दुनिया रंग बदलती जाये, प्यार करे फिर ठुकराये। किसके रोके कौन रूका है, लहरों सा खोता जाये।

तृप्त धारा क्या कभी कहाये, नयना आँसू बरसाये। अनजानी राहें इस जग की, पता नहीं कब खो जायें। उठे तरंग फिर गिर जाती है, दुनिया आनी जानी है। व्याकुल मनुआ सोंचे पागल, नीर बहावे हरपल है।

*गीत सुना दे ऐसा कोई, टूटा दिल जोड़े कोई। बिछुड़ गया जो प्रियतम प्यारा, बिन उसके अँखियाँ रोई। प्यार बढ़े तो मेघा बरसे, सुन्दर सुन्दर फूल खिले। लुटा यहाँ सौरभ इस जग को, धान्य धाार में बहे चले।*108

कुछ कहो अपनी कहानी, मेरी भी कुछ सुन तो ले। बीत जायेगा सफर यह, न जिद करो खुशियों को ले। जान ले महफिल अधूरी, तुम बिन लगती यह सूनी। न बनो निर्मोही इतने, देखो बहता है पानी।

खेल दो दिन खेलना है, थिर नहीं कोई कहानी। न जला दिल दुनिया ानी, जा रही संधया न आनी। आ दिलों के पास आ जा, सूनी महफिल सजा जा। मिट जायेंगे सारे गम, दुखों के बादल उड़ा जा।

ना समझ ना प्यार जाना, बन गया क्यों बेगाना। जले हम यह जानते है, बहुत मुश्किल है भुलाना। बेकाई किसलिये की, प्यार की होली जला दी। नयन के आँसू न देखे, खेलती किश्ती डुबो दी।

109ण

शिकवा करें किसको यहाँ, सुनने को यहाँ कौन है? देखूँ मैं आँख को उठा, नभ भी यहाँ पर मौन है। दिल को लगाते फिर रहे, सुपने संजोते फिर रहे। टूटते जब बिखरते यह, न संभल पाते रो रहे।

कैसे मनाये हम तुझे, ना राज तेरा जानते। तुम छिप गये हो किस जगह, कैसे पुकारें मानते? चाहत यहाँ बन बन गिरी, नयनों से नीर है झरा। देख ना, मोड़ मुंह चले, कैसे कहें तू है मेरा।

कुछ पल को देख ले तुझे, कुछ देर को तो रोक लो। बीतेगी शाम गम न हो, नयनों के जल को देख लो। आओ पुकारते तुम्हें, शिकवा मिटा दिल से मिलें। जीवन नदी है बह रही, ना जानते फिर कब मिले।